समावेश

संपादक

डॉ. खेमकरण ‘सोमन’

आदरणीय गुरुजी,

आप मुझे या मेरे नाम को भूल गई होंगी। आपने मेरे जैसे न जाने कितनों को फेल किया है।
परंतु मैं अकसर आपको, और दूसरी अध्यापिकाओं को, उस संस्था को जिसे आप स्कूल के नाम से पुकारते हैं, और उन लड़कों को जिन्हें आप फेल करती हैं, याद करता हूँ।

आप फेल करके हम लोगों को सीधे खेतों में या फैक्ट्रियों में धकेल कर हमें बिलकुल भूल जाती हैं।

संकोच : दो वर्ष पहले जब मैं माध्यमिक कक्षा में था, तब आपको देखकर मुझे बहुत डर लगता था। सच पूछिए तो मैं शुरू से ही थोड़ा झेंपू किस्म का हूँ। जब मैं बहुत छोटा था तो मैं अपनी नजर सदा जमीन की ओर रखता था। मैं दीवार के किनारे सटा हुआ चलता था, शायद यह मेरे या मेरे परिवार की, एक प्रकार की बीमारी है। मेरी माँ भी इसी प्रकार की है कि तार देखते ही घबरा जाती है। मेरे पिता सब कुछ सुनते और समझते हैं, पर बोलते कम हैं।

बाद में मैंने सोचा कि झेंपना शायद हमारे पहाड़ी समुदाय का रोग है। मैदानी इलाकों के किसानों में कहीं अधिक आत्मविश्वास होता है। शहर के मजदूरों की तो बात ही छोड़िए।
ध्यान से देखने पर अब मुझे पता चला कि सारी महत्वपूर्ण नौकरियाँ तथा संसद की सारी सीटें, बड़े घर के लड़कों को मिलती हैं-मजदूर देखते ही रह जाते हैं।

अतः मजदूर भी हम लोगों की तरह हैं। गरीब लोगों का संकोच बहुत प्राचीन है और मैं उसके रहस्य को समझा नहीं सकता, यद्यपि मैं स्वयं गरीबी से घिरा हुआ हूँ। शायद यह न तो किसी प्रकार की कायरता है और न किसी प्रकार की वीरता। यह केवल आत्माभिमान की कमी है।

- बारबियाना स्कूल के आठ बच्चे

साभार : अध्यापक के नाम पत्र
लेखक : बारबियाना स्कूल के आठ बच्चे

वर्ष: 2, अंक_ 03, जुलाई 2024

समावेश

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर
की
षटमासिक प्रस्तुति

संरक्षक एवं प्रधान संपादक :
प्रो. कमल किशोर पांडे

परामर्श :
डॉ. अनिल कुमार सैनी

संपादक :
डॉ. खेमकरण 'सोमन'

सहायक संपादक :
डॉ. सन्ध्या चौरसिया
डॉ. संगीता

तकनीकी संपादक :
डॉ. अतीश वर्मा
डॉ. ललित कुमार
डॉ. संजय सिंह बिष्ट
डॉ. कैलाश उनियाल
डॉ. हितेंद्र शर्मा

छात्र संपादक :

सपना
नेहा
उज़मा खान
निकिता
अंशिका गुप्ता
दिव्या

रितिका
सोनम
कविता
काजल
मन्तशा बी

नेहा मौ. उमर
कु. अंजली
निशा
तन्नू

दीपक कुमार
राहुल सिसौदिया
सताक्षी शर्मा
आदर्श कुमार
सुषमा
बली मोहम्मद

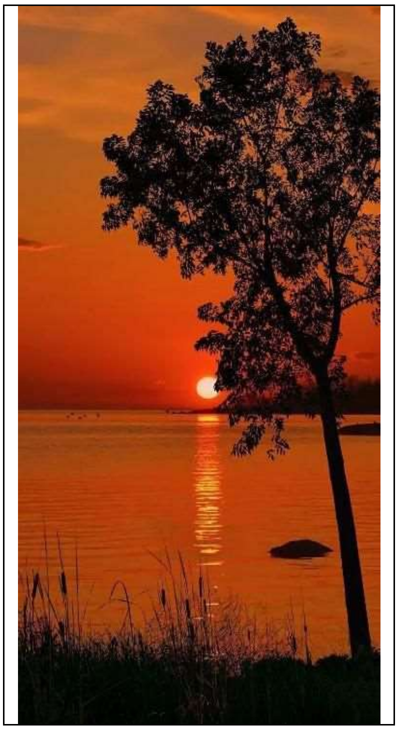

संपादकीय सम्पर्क :

संपादक, हिंदी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर
[ऊधम सिंह नगर] पिन-262401
ईमेल : hindivibhag2@gmail.com

कविता

जाहिल के बाने

- भवानीप्रसाद मिश्र

मैं असभ्य हूँ क्योंकि
खुले नंगे पाँवों चलता हूँ
मैं असभ्य हूँ क्योंकि धूल की गोदी में पलता हूँ।

मैं असभ्य हूँ क्योंकि
चीरकर धरती धान उगाता हूँ
मैं असभ्य हूँ क्योंकि ढोल पर बहुत ज़ोर से गाता हूँ।

आप सभ्य हैं क्योंकि
हवा में उड़ जाते हैं ऊपर
आप सभ्य हैं क्योंकि आग बरसा देते हैं भू पर।

आप सभ्य हैं क्योंकि
धान से भरी आपकी कोठी
आप सभ्य हैं क्योंकि ज़ोर से पढ़ पाते हैं पोथी।

आप सभ्य हैं क्योंकि
आपके कपड़े स्वयं बने हैं
आप सभ्य हैं क्योंकि जबड़े ख़ून सने हैं।

आप बड़े चिंतित हैं
मेरे पिछड़ेपन के मारे
आप सोचते हैं कि सीखता यह भी ढँग हमारे।

मैं उतारना नहीं चाहता
जाहिल अपने बाने
धोती-कुरता बहुत ज़ोर से लिपटाए हूँ याने !

संरक्षक
एवं प्रधान संपादक की ओर से ...

प्रो. कमल किशोर पांडे

प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाज़पुर,
ऊधम सिंह नगर

प्यारे छात्र-छात्राओं,
मैं हमेशा ही आपसे बातचीत करना चाहता हूँ क्योंकि आपसे बातचीत करना मुझे अच्छा लगता है। कभी आपकी पढाई के सन्दर्भ में बातचीत। कभी आपकी रुचियों के सन्दर्भ में बातचीत। कभी आपके भविष्य के सन्दर्भ में, तो कभी इस सन्दर्भ में बातचीत कि शिक्षा प्राप्त करके हमने, सर्वप्रथम संवेदनशील मनुष्य बनना है। मैं अपनी बात एक कहानी के माध्यम से स्पष्ट करना चाहता हूँ। आशा है आप कहानी के द्वारा मेरी बात समझने का प्रयत्न करेंगे, और अपना मंतव्य भी मुझसे सांझा करेंगे।

तो कहानी इस प्रकार है कि एक छह वर्ष का लड़का अपनी चार वर्ष की छोटी बहन के साथ बाज़ार से जा रहा था। अचानक उसे लगा कि उसकी बहन पीछे रह गई है।
वह रुका, पीछे मुड़कर देखा तो जाना कि उसकी बहन खिलौने की एक दुकान के सामने खड़ी कोई चीज़ निहार

रही है। लड़का पीछे आता है और बहन से पूछता है, "कुछ चाहिए तुम्हें?"

लड़की एक गुड़िया की तरह उँगली उठाकर दिखाती है। बच्चा उसका हाथ पकड़ता है, एक ज़िम्मेदार बड़े भाई की तरह अपनी बहन को वह गुड़िया देता है। बहन बहुत खुश हो गई।

दुकानदार यह सब देख रहा था, बच्चे का व्यवहार देखकर आश्चर्यचकित भी हुआ... अब वह बच्चा बहन के साथ काउंटर पर आया और दुकानदार से पूछा, "कितनी क़ीमत है इस गुड़िया की?"

दुकानदार एक शान्त और गहरा व्यक्ति था, उसने जीवन के कई उतार देखे थे, उसने बड़े प्यार और अपनत्व से बच्चे से पूछा, "बताओ बेटे, आप क्या दे सकते हो?"

बच्चा अपनी जेब से वो सारी सीपें बाहर निकालकर दुकानदार को देता है जो उसने थोड़ी देर पहले बहन के साथ समुद्र किनारे से चुन-चुन कर बीनी थी।

दुकानदार वो सब लेकर यूँ गिनता है जैसे पैसे गिन रहा हो। सीपें गिनकर वह बच्चे की तरफ देखने लगा तो बच्चा बोला, "सर कुछ कम हैं क्या?"

दुकानदार बोला, "नहीं... नहीं, ये तो इस गुड़िया की क़ीमत से भी ज़्यादा हैं, ज्यादा मैं वापस देता हूँ। यह कहकर उसने 4 सीपें रख लीं और बाकी की बच्चे को वापस दे दीं।"

बच्चा बड़ी खुशी से वो सीपें जेब में रखकर बहन को साथ लेकर चला गया।

यह सब उस दुकान का कामगार देख रहा था, उसने आश्चर्य से मालिक से पूछा, "मालिक ! इतनी महँगी गुड़िया आपने केवल चार सीपों के बदले में दे दी?"

दुकानदार एक स्मित सन्तुष्टि वाला हास्य करते हुए बोला, "हमारे लिए ये केवल सीप हैं पर उस छह साल के बच्चे के लिए अतिशय मूल्यवान हैं और इस उम्र में वो नहीं जानता कि पैसे क्या होते हैं? पर जब वह बड़ा होगा ना... और जब उसे याद आएगा कि उसने सीपों के बदले बहन को गुड़िया खरीदकर दी थी, तब उसे मेरी याद ज़रूर आएगी, और फिर वह सोचेगा कि "यह विश्व अच्छे मनुष्यों से भी भरा हुआ है।"

यही बात उसके अन्दर सकारात्मक दृष्टिकोण बढ़ाने में मदद करेगी और वो भी एक अच्छा इनसान बनने के लिए प्रेरित होगा...

प्यारे छात्र-छात्राओं,
यह कहानी यहीं पर समाप्त हुई लेकिन आपकी भूमिका अभी समाप्त नहीं हुई है! आपने और हम सबने मिलकर अभी ऐसी दुनिया बनानी है जिसमें मनुष्य और मनुष्य के बीच विश्वास जन्म ले सके।

समावेश का यह दूसरा अंक अब आपको सौंप रहा हूँ। यह अंक कैसा लगा? मुझे अवश्य बताएँ।

अनुक्रम

संरक्षक एवं प्रधान संपादक की कलम से ... 05

संपादकीय ... 55

विशेष पत्र

बारबियाना स्कूल के आठ बच्चे 02

आलेख

डॉ. बृजेश कुमार जोशी 09

डेविड कुमार 12

दीपक कुमार 18

रीना 21

डॉ. योगेश पांडे 23

डॉ. संजय सिंह बिष्ट 45

कविता

भवानीप्रसाद मिश्र 04

के. सच्चिदानंदन 24

उज़्मा खान 26

विजय जोशी 27

सपना 28

महेंद्र सिंह बोहरा 30

यात्रा वृत्तांत

डॉ. अनिल कुमार सैनी 15

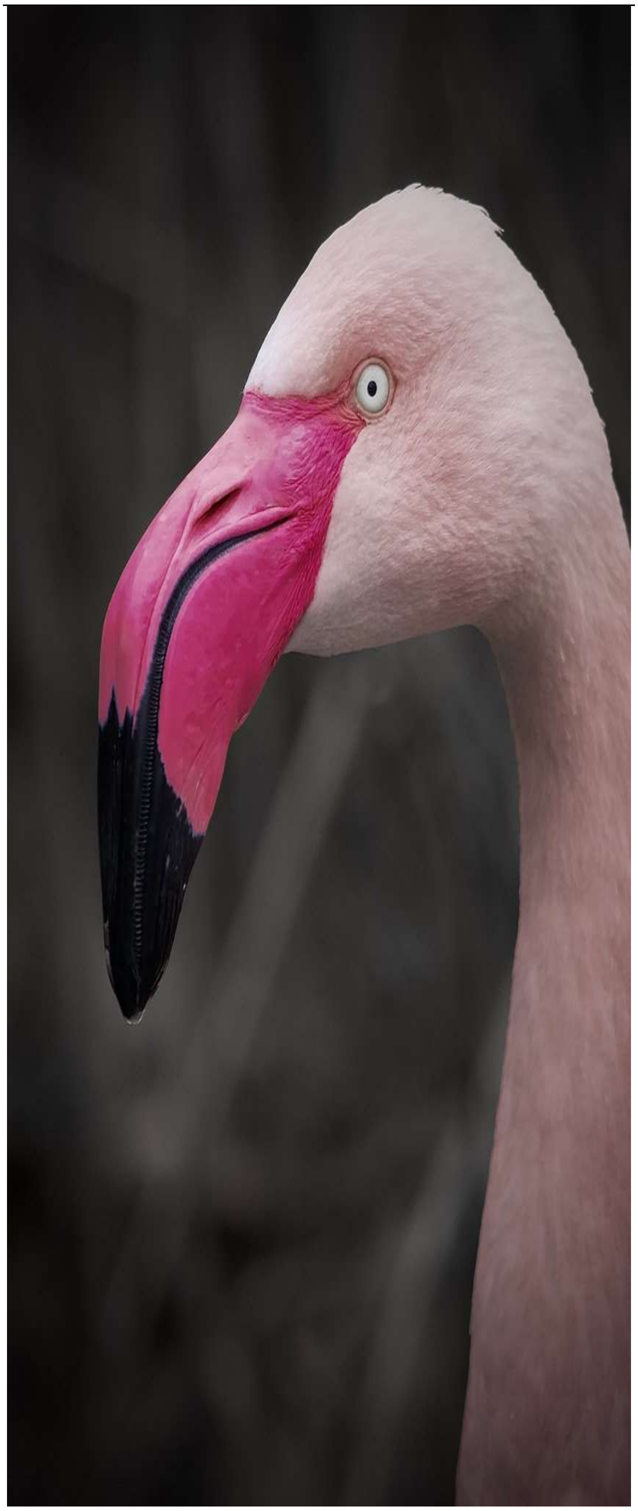

लघुकथा

डॉ. खेमकरण 'सोमन' 21

मेरे पिता

सपना 32

नेहा 33

पूजा कश्यप 34

मेरी माँ

वंदना कुमारी 36

सपना 36

पूजा कश्यप 37

यादें 48

महाविद्यालय गतिविधियाँ 38-44

रिपोर्ट :

- डॉ. पूजा रानी
- डॉ. कैलाश
- डॉ. संगीता, उज़मा खान, दिव्या, सुषमा, बली मोहम्मद, सताक्षी शर्मा और शिवम्
- गंगा, शिवम् और शैलेश पंत
- डॉ. नीलम मनोला
- डॉ. अतीश वर्मा
- डॉ. अतीश वर्मा
- डॉ. मेहराज बानो

यादें ...

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2024 के अवसर पर फिल्म विशेषज्ञ-लेखिका एवं भारतीय भाषा एवं साहित्य विभाग [गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, जिला- गौतम बुद्ध नगर] की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉ. विभावरी को सम्मानित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. के.के. पांडे।

महाविद्यालय के लिए निरंतर श्रमशील रहने वाले वाणिज्य विभाग प्रभारी और एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. मनप्रीत सिंह महाविद्यालय के कर्मचारियों एवं अपने एनसीसी शूर-वीरों के साथ।

महाविद्यालय की वरिष्ठ शिक्षिका डॉ. रीता सचान और डॉ. बीके जोशी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस- 2024 के अवसर पर बी.ए. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा उज़मा खान सम्मानित हुई।

विशेष आलेख

भारतीय राजनीति में जनमत निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ. बृजेश कुमार जोशी
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, ऊधम सिंह नगर

[कई पुस्तकों के लेखक डॉ. बृजेश कुमार जोशी बहुत मिलनसार प्रवृत्ति के हैं। युवा पीढ़ी को निरंतर प्रोत्साहित करने वाले जोशी जी, सही को सही और गलत को गलत कहने में हिचकते नहीं। इसी वर्ष जुलाई 2024 में उनका स्थानांतरण राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत में हो गया है। यह विशेष आलेख लिखने के लिए समावेश टीम उनके प्रति आभार व्यक्त करती है।]

परिचय

पिछले दो दशकों में, भारत ने एक डिजिटल क्रांति का अनुभव किया है जिसने समाज के विभिन्न पहलुओं को बदल दिया है, जिसमें राजनीति भी शामिल है। इस परिवर्तन में सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक सोशल मीडिया का उदय है, जिसने भारतीय लोकतंत्र में सार्वजनिक राय को आकार देने और व्यक्त करने के तरीके को मूल रूप से बदल दिया है। सोशल मीडिया एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं, विशेष रूप से राजनीति, को प्रभावित करता है। भारत में, जहाँ 500 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम जैसी प्लेटफॉर्म जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सोशल मीडिया की व्यापक पहुँच और तत्काल प्रकृति ने राजनीतिक संचार को बदल दिया है, जिससे यह देश में राजनीतिक रणनीति का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है।

तस्वीर में : डॉ. बृजेश कुमार जोशी

ऐतिहासिक संदर्भ

सोशल मीडिया के आगमन से पहले, समाचार पत्र, टेलीविजन और रेडियो जैसे पारंपरिक मीडिया सार्वजनिक राय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाते थे। ये प्लेटफॉर्म, भले ही प्रभावशाली थे, लेकिन उनकी एकतरफा संचार मॉडल के कारण सीमित थे। जनता जानकारी प्राप्त कर सकती थी, लेकिन त्वरित प्रतिक्रिया या बातचीत के लिए सीमित रास्ते थे। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के उदय ने इस गतिशीलता को बदल दिया। इन प्लेटफॉर्मों ने दो-तरफा सूचना प्रवाह को सक्षम किया, जिससे उपयोगकर्ता न केवल सामग्री उपभोग कर सकते हैं बल्कि इसे बना और साझा भी कर सकते हैं, इस प्रकार जानकारी के प्रवाह का लोकतंत्रीकरण हो गया। भारतीय राजनीति में सोशल मीडिया का एकीकरण 2014 के आम चुनावों के दौरान जोर पकड़ने लगा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सोशल मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग किया, अपने संदेशों का

प्रसार करने, युवाओं से जुड़ने और एक मजबूत डिजिटल उपस्थिति बनाने के लिए। सोशल मीडिया के इस रणनीतिक उपयोग को पार्टी की जीत में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में देखा गया। तब से, विभिन्न राजनीतिक दलों ने एक मजबूत सोशल मीडिया रणनीति के महत्व को समझा है।

राजनीतिक उपकरण के रूप में सोशल मीडिया

प्रचार और लामबंदी:

सोशल मीडिया प्लेटफार्म चुनाव अभियानों के लिए एक युद्धभूमि के रूप में कार्य करते हैं। पार्टियां इन प्लेटफार्मों का उपयोग अपने उम्मीदवारों को बढ़ावा देने, अपने घोषणापत्र साझा करने और समर्थन जुटाने के लिए करती हैं। हैशटैग, वायरल वीडियो और मीम्स का निर्माण ध्यान आकर्षित करने और जनमत को प्रभावित करने के लिए किया जाता है। विशिष्ट जनसांख्यिकी को माइक्रो-टार्गेट करने की क्षमता अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी प्रचार की अनुमति देती है। राजनेता और राजनीतिक दल सक्रिय रूप से इन प्लेटफार्मों का उपयोग मतदाताओं तक पहुंचने, अपने संदेश साझा करने और सार्वजनिक भावना का आकलन करने के लिए करते हैं। चुनावों के दौरान, सोशल मीडिया अभियान पारंपरिक रैलियों और विज्ञापनों के जितने ही महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए, 2014 और 2019 के आम चुनावों में प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा सोशल मीडिया का व्यापक उपयोग देखा गया, जिससे मतदाता व्यवहार और चुनाव परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

जनसंपर्क:

राजनेता और पार्टियाँ मतदाताओं से सीधे जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करती हैं, पारंपरिक मीडिया फिल्टरों को बायपास करती हैं। लाइव स्ट्रीम, प्रश्नोत्तर सत्र और इंटरैक्टिव पोस्ट निकटता और पहुँच की भावना पैदा करते हैं। यह सीधा जुड़ाव एक वफादार अनुयायी आधार बनाने में मदद करता है जो उन राजनेताओं से व्यक्तिगत रूप से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं जिन्हें वे समर्थन करते हैं। भारतीय लोकतंत्र में सोशल मीडिया के सबसे उल्लेखनीय प्रभावों में से एक यह है कि यह उन आवाजों को बढ़ाने की क्षमता है जो पहले हाशिए पर थीं या अनदेखी की जाती थीं। कार्यकर्ता और सामान्य नागरिक सोशल मीडिया का उपयोग मुद्दों को उजागर करने, समर्थन जुटाने और अधिकारियों पर कार्रवाई के लिए दबाव डालने के लिए करते हैं। अन्ना हजारे द्वारा 2011 में चलाए गए भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन और हाल ही के किसान आंदोलनों ने सोशल मीडिया का उपयोग करके संगठित, अपना संदेश फैलाया और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया।

मत निर्माण और प्रेरणा:

सोशल मीडिया जनमत निर्माण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। इको चैंबर प्रभाव, जहां उपयोगकर्ताओं को केवल उन सूचनाओं का सामना करना पड़ता है जो उनकी मौजूदा मान्यताओं को सुदृढ़ करती हैं, राजनीतिक दृष्टिकोणों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। ट्रेंडिंग टॉपिक्स और वायरल पोस्ट अक्सर एजेंडा सेट करते हैं, उन मुद्दों को फ्रेम करते हैं जो सार्वजनिक चर्चा पर हावी रहते हैं।

राजनीति में सोशल मीडिया का अंधेरा पक्ष

हालांकि सोशल मीडिया कई लाभ प्रदान करता है, इसका एक अंधेरा पक्ष भी है जो राजनीतिक चर्चा को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है । सोशल मीडिया ने नागरिकों को सशक्त बनाया है और लोकतांत्रिक

जागरूकता को बढ़ाया है, इसने गलत सूचना और फेक न्यूज के संबंध में चुनौतियां भी पेश की हैं। झूठी जानकारी का तेजी से प्रसार सामाजिक अशांति का कारण बन सकता है, जैसा कि व्हाट्सएप पर अफवाहों के प्रसार के कारण कई भीड़ हिंसा के मामलों में देखा गया है। भारतीय लोकतंत्र के लिए चुनौती यह है कि वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संतुलित करे और हानिकारक गलत जानकारी के प्रसार को रोके।

गलत सूचना और फर्जी खबरें:

गलत सूचना और फर्जी खबरों का तेजी से प्रसार एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। गलत जानकारी जल्दी वायरल हो सकती है, जिससे जनमत असत्य पर आधारित हो सकता है। राजनीतिक पार्टियाँ और हित समूह कभी-कभी इसका उपयोग प्रचार फैलाने या विरोधियों को बदनाम करने के लिए करते हैं।

इको चैंबर्स और ध्रुवीकरण:

सोशल मीडिया एल्गोरिदम अक्सर इको चैंबर्स बनाते हैं, जहां उपयोगकर्ताओं को केवल वह सामग्री दिखाई देती है जो उनकी मौजूदा मान्यताओं के अनुरूप होती है। इससे राजनीतिक ध्रुवीकरण बढ़ सकता है, क्योंकि व्यक्ति विविध दृष्टिकोणों से कम अवगत होते हैं।

ट्रोलिंग और दुरुपयोग:

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म द्वारा प्रदान की गई गुमनामी ट्रोलिंग और अपमानजनक व्यवहार को जन्म दे सकती है। राजनेता, पत्रकार और साधारण उपयोगकर्ता अक्सर उत्पीड़न और धमकियों का सामना करते हैं, जिससे स्वतंत्र अभिव्यक्ति और स्वस्थ बहस को बाधा पहुंचती है।

विनियमन और जिम्मेदारी

भारतीय सरकार ने सोशल मीडिया को विनियमित करने के लिए कदम उठाए हैं, जिसका उद्देश्य दुरुपयोग को रोकना और लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं की रक्षा करना है। विनियम प्लेटफार्मों से अवैध सामग्री को हटाने और शिकायतों का शीघ्र समाधान करने की आवश्यकता होती है। हालांकि, इन उपायों ने सेंसरशिप और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बहस को जन्म दिया है, जिससे यह आवश्यकता पैदा होती है कि राष्ट्रीय सुरक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों दोनों की रक्षा करने के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण अपनाया जाए। भारतीय राजनीति में सोशल मीडिया की भूमिका ने विनियमन और जिम्मेदारी पर चर्चा को प्रेरित किया है। भारतीय सरकार ने फर्जी खबरों के प्रसार को रोकने और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए दिशानिर्देश पेश किए हैं। हालांकि, विनियमन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाना एक नाजुक चुनौती बनी हुई है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने निस्संदेह भारतीय राजनीति को अधिक इंटरैक्टिव और तात्कालिक बनाकर बदल दिया है। इसने नागरिकों को अपने नेताओं से सीधे जुड़ने और राजनीतिक चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाया है। हालांकि, गलत सूचना, ध्रुवीकरण और ऑनलाइन दुरुपयोग की चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है ताकि सोशल मीडिया जनमत निर्माण में एक सकारात्मक शक्ति के रूप में कार्य कर सके। जैसा कि भारत अपने डिजिटल भविष्य को आगे बढ़ाता है। सोशल मीडिया ने भारतीय लोकतंत्र में जनमत के परिदृश्य को निस्संदेह रूपांतरित किया है। इसने नागरिकों को सशक्त बनाया है, राजनीतिक सहभागिता बढ़ाई है, और सामाजिक आंदोलनों को सुविधाजनक बनाया है। हालांकि, यह चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है जिन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है कि लोकतंत्र पर इसका प्रभाव सकारात्मक और रचनात्मक हो। जैसे-जैसे भारत डिजिटल युग में आगे बढ़ रहा है, सोशल मीडिया की भूमिका देश की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और सार्वजनिक चर्चा को आकार देने में महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

आलेख

दलित एवं भारतीय समाज: स्वीकार्यता एवं संघर्ष

डेविड कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, ऊधम सिंह नगर

भारत का युवा, जो आज पंख पसारे खड़ा है तथा उड़ने को अति आकांक्षी है वह इस तथ्य से बिलकुल अनभिज्ञ है कि उसे ये पंख कैसे मिले हैं। हमारा अतीत अपने अंदर एक लंबा संघर्ष संजोए हुए है। वर्तमान टिक-टॉक एवं रील बनाने वाली पीढ़ी न तो इस बात की गंभीरता को समझती है और न ही समझना चाहती है। वह तो बस इंस्टाग्राम पर अदम गोंडवी की कविता की कुछ पंक्तियां सुनकर उन संवेदनाओं तक पहुंचे बिना ही लाइक और कमेंट करके आगे बढ़ जाती है। यदि हम अपने अतीत में झांके तो पाएंगे कि दलित समाज की प्रत्येक दूसरी गली अदम गोंडवी की रचना "चमारों की गली" से कहीं न कहीं मेल खाती है, तथा हर जगह संघर्ष की अलग-अलग कहानियां दफ्न है जिन्हें कभी हमारे समाज की तवज्जो नहीं मिली।

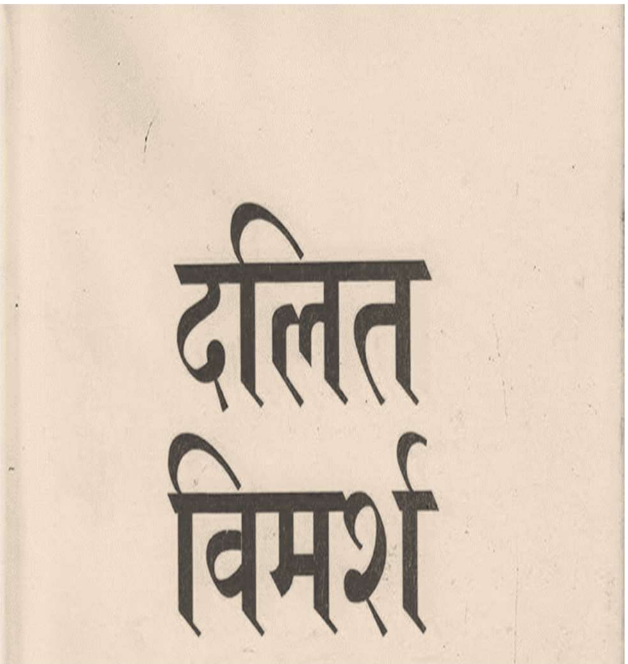

मानव सभ्यता के विकास के क्रम में संसार के हर कोने में मानव की कुछ जातियों ने मिलकर अन्य जातियों का दमन किया तथा उन्हें दासता का जीवन जीने के लिए विवश किया। वर्तमान समय में संसार के जो देश स्वयं को विकसित राष्ट्र एवं सभ्य बताते हैं उनका इतिहास इस संदर्भ में अत्यधिक कलंकित रहा है। यूरोप एवं अमेरिकी क्षेत्रों में अश्वेतों को दास बना कर जिस प्रकार का निरीह एवं अमानवीय जीवन जीने हेतु विवश किया गया, निम्न जातियों के विरुद्ध उतना घृणित व्यवहार शायद संसार में अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। इसी प्रकार भारत में प्राचीन काल से ही जनमानस को चार वर्णों, यथा- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में विभाजित कर दिया गया तथा अधिकारों, दायित्वों एवं सामाजिक हैसियत की दृष्टि से एक सोपान निर्धारित किया गया, जिसमें सबसे ऊपर ब्राह्मणों तथा इसके उपरांत क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को स्थान दिया गया।

उल्लेखनीय है कि वैदिक काल में जब वर्ण व्यवस्था अपनी प्रारम्भिक अवस्था में थी तब इसका स्वरूप उदार था तथा एक ही परिवार के विभिन्न सदस्य अलग-अलग वर्णों का चयन कर सकते थे, उदाहरणार्थ एक पुरोहित का पुत्र एक लोहार अथवा एक शिल्पकार का पुत्र सैनिक हो सकता था, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार अपना व्यवसाय चुनने का अधिकार था। परंतु उत्तरवर्ती काल में यह व्यवस्था अत्यधिक कठोर हो गयी तथा व्यक्ति के वर्ण का निर्धारण उसके जन्म के आधार पर होने लगा। तत्पश्चात् शूद्र अथवा निम्न जाति के लोगों के लिए दास के समान जीवन पद्धति निर्धारित की गई तथा उनके कल्याण का मार्ग उच्च वर्णों की सेवा बताया गया। इसके साथ ही शूद्रों को अपवित्र एवं अस्पृश्य की संज्ञा दी गयी तथा उनके लिए निर्धारित कुछ स्थानों के अतिरिक्त अन्य सभी सार्वजनिक स्थलों पर उनकी आवाजाही प्रतिबंधित कर दी गयी। दिन प्रतिदिन समाज में शूद्रों की स्थिति अत्यधिक दयनीय होती गयी तथा उन्हे घृणित एवं हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। मुंशी प्रेमचंद ने अपनी रचना "ठाकुर का कुआं" में इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

विश्व के विभिन्न भागों के अनेक विद्वानों द्वारा भी इस व्यवस्था का समर्थन किया गया। उदाहरणार्थ, पाश्चात्य जगत का महान विचारक अरस्तु दास प्रथा को उचित

मानता है तथा इसे समाज के विकास हेतु आवश्यक बताता है। इसी प्रकार भारत में मनु द्वारा वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया गया, बल्कि वह तो यहां तक कहता है कि राज्य के राजा को शूद्रों को उनके लिए निर्धारित कार्य करने हेतु विवश कर देना चाहिए। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रकार कुछ जातियों के दमन एवं शोषण की यह स्थिति मात्र भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में किसी न किसी रूप अथवा मात्रा में पुराकाल से ही विद्यमान रही है तथा समाज के निम्न वर्गों ने विभिन्न कालावधियों में बहुधा प्रकार के अन्याय सहे हैं। दलित समाज प्राचीन काल की उन्हीं शूद्र जातियों का वर्तमान स्वरूप है। प्रसिद्ध विद्वान थॉमस हॉब्स ने मानव सभ्यता एवं राज्य संस्था के विकास का विश्लेषण करने के लिए प्राकृतिक अवस्था की संकल्पना प्रस्तुत की तथा बताया कि राज्य संस्था के अस्तित्व में आने से पूर्व सभी मनुष्य एक प्राकृतिक दशा में रहते थे। वह स्थिति पूर्णतः अराजकता की स्थिति थी। इस अवस्था में मनुष्य का जीवन एकाकी, पाशविक तथा क्षणभंगुर था एवं जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला कानून चलता था, परंतु इसके बावजूद हॉब्स ने यह माना है कि प्राकृतिक क्षमताओं की दृष्टि से कोई भी मनुष्य किसी दूसरे से कम नहीं होता है, तथा यदि कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से बलवान है तो संभव है कि दूसरा मनुष्य तीक्ष्णबुद्धि होगा और इस प्रकार प्रकृति का संतुलन बना रहता है। परंतु भारतीय परिप्रेक्ष्य में शूद्रों को बौद्धिक रूप से निम्न स्तर का माना गया तथा उन्हें अध्ययन एवं शिक्षा से विमुख रखा गया। मनु के अनुसार शूद्रों के लिए पवित्र ग्रंथों का अध्ययन वर्जित है तथा उसने शिक्षकों को भी शूद्रों को शिक्षा देने से रोका है तथा कहा है कि "वह जो शूद्र को पवित्र विधि का ज्ञान देगा वह अपने शिष्य के साथ नर्क में डूब जाएगा"।

उपरोक्त परिस्थितियों के फलस्वरुप भारतीय संविधान निर्माताओं ने शिक्षा के अधिकार को मूल अधिकारों में शामिल किया तथा समाज के पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में भी आरक्षण का प्रावधान किया। प्रायः यह देखने में आता है कि जब भी समाज के दलित वर्गों द्वारा किसी प्रदर्शन अथवा रैली का आयोजन किया जाता है तो उसमें लोग डॉ० भीमराव अंबेडकर के चित्र वाली तख्तियां लेकर जाते हैं। इसका एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि दलित समाज के लोग डॉ० अंबेडकर को अपने समाज का एक प्रतीक मानते हैं जिसने शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में वह पराकाष्ठा प्राप्त की जो दलित वर्ग में अत्यधिक दुर्लभ है।

तस्वीर में : डेविड कुमार, शोधछात्र

यदि हम अपने इतिहास का अध्ययन दलित वर्गों के संदर्भ में करें तो यह पाएंगे कि भारतीय क्षेत्रों में जब भी बाह्य शक्तियों द्वारा आक्रमण एवं शासन स्थापित किए गए तो उस अवस्था में भी समाज की निम्न जातियां सामाजिक रुप से अत्यधिक प्रभावित हुईं। बाह्य शक्तियों ने यहां आकर अपने धर्मों के प्रचार-प्रसार के साथ ही साथ यहां के लोगों का धर्मांतरण कराने का भी प्रयत्न किया। उदाहरणस्वरूप जब मुग़ल यहां आए तो उन्होंने लोगों को धर्म परिवर्तन करने हेतु विभिन्न प्रकार के प्रलोभन दिए तथा कुछ मामलों में लोगों का बलपूर्वक भी धर्म परिवर्तन कराया गया। इस प्रक्रिया में भारतीय समाज के कमजोर तबके अर्थात निम्न वर्ग सर्वाधिक प्रभावित हुए। इसी प्रकार जब यूरोपीय शक्तियों ने भारत में शासन स्थापित किया तो उन्होंने यहां के जनमानस को धर्मांतरण के बदले अच्छी शिक्षा, नौकरियां और समाज में अच्छी हैसियत देने की बात की। अंततः इन परिस्थितियों में भी समाज के कमजोर वर्गों ने अच्छा जीवन पाने की लालसा के कारण धर्म परिवर्तन किया। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय समाज के दलित वर्गों ने अपने घृणा एवं तिरस्कार से भरे हुए जीवन को बदलने हेतु अपने सामने आए आगे बढ़ने के प्रत्येक अवसर को स्वीकार किया, भले ही उसके लिए उन्हें अपना धर्म ही क्यों ना बदलना पड़ा हो, क्योंकि जिस प्रकार का

दमित, अस्पृश्य एवं अपमानजनक जीवन उन्हें जीना पड़ता था वह मानवीय गरिमा के विरुद्ध था।

ध्यातव्य है कि वर्ण व्यवस्था के सृजन द्वारा विभिन्न वर्णों के लिए कार्य भी निर्धारित किए गए थे, तथा दलित जाति के लोगों को उनके लिए निर्धारित पेशों के अतिरिक्त अन्य कार्य करने की अनुमति नहीं थी। अतः यह कहा जा सकता है कि समाज के दलित वर्गों के लिए विकास के सभी रास्ते बंद कर दिए गए थे। यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो आज भी प्रायः ऐसी घटनाएं सामने आती रहती हैं जिन्हें देखकर यह प्रतीत होता है कि दलित समाज आज भी अपने अस्तित्व एवं गरिमापूर्ण जीवन के लिए संघर्षरत है तथा उन्हें सामाजिक स्तर पर समान स्वीकार्यता प्राप्त नहीं है। उदाहरणस्वरूप प्रायः अखबारों में इस प्रकार की खबरें प्रकाशित होती हैं कि फलां जगह उच्च जाति के लोगों ने दलित समाज के दूल्हे को घोड़ी से उतार कर पीटा अथवा इस कृत्य के लिए उसकी जान ले ली। इस प्रकार की घटनाएं हमारे समाज को अत्यधिक कलंकित करती हैं। हमारे समाज में आज भी संवेदनहीनता तथा असहिष्णुता व्याप्त है तथा दलित वर्ग के लोगों को आज भी समाज में तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।

हमारा संविधान भारत के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्रदान करता है तथा किसी भी पंथ से कोई भेदभाव नहीं करता। हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान का निर्माण करते समय देश के प्रत्येक वर्ग तथा संप्रदाय के विकास हेतु प्रावधान किए तथा इसके साथ ही साथ सभी नागरिकों के लिए कुछ मूल कर्तव्य भी निर्धारित किए। आज यह अति आवश्यक है कि हमारे देश के नागरिक तथा विशेष तौर पर युवा संवेदनशील बनें तथा समाज के अल्पविकसित तबकों से सहानुभूति रखें, एवं साथ ही उनके उन्नयन हेतु भी कार्य करें। हमारे देश का समग्र विकास तभी संभव है जब देश के सभी वर्ग राष्ट्र के विकास में योगदान देंगे, तथा यह कार्य समाज के पिछड़े वर्गों को शिक्षा एवं विकास के समुचित अवसरों के साथ ही साथ समाज में एक सम्मानजनक स्थान दिए बिना संभव प्रतीत नहीं होता है।

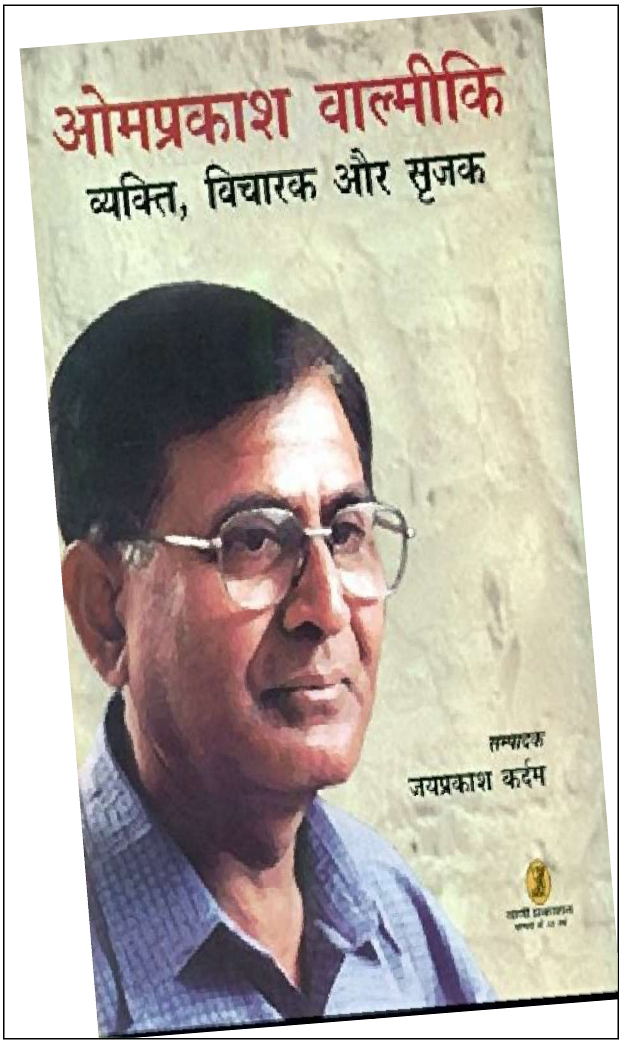

यात्रा वृत्तांत

आप दोनों बहुत स्मार्ट हैं

डॉ. अनिल कुमार सैनी

लिखने-पढ़ने में रूचि रखने के अतिरिक्त डॉ. अनिल कुमार सैनी यात्राओं के शौक़ीन हैं। वर्तमान में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, ऊधम सिंह नगर में समाजशात्र विषय में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। इन दिनों कविता और संस्मरण लिख रहे हैं।

उच्च शिक्षा, उत्तराखंड में सेवा प्रारंभ होने के साथ-साथ ही रेलगाड़ी का सफर छूटता चला गया। 9 अक्टूबर, 2010 को लखनऊ से टनकपुर की यात्रा शायद रेलगाड़ी द्वारा मेरी अंतिम यात्रा थी। सेवा के प्रारंभिक 5 वर्षों तक सार्वजनिक यातायात से यात्रा होती गई। रेलगाड़ी या सार्वजनिक यात्रा के अनुभव ने समाज और मानव व्यवहार को समझने में बहुत मदद की, लेकिन व्यक्तिगत साधन के आ जाने से यात्रा के दौरान होने वाले संपर्क को अत्यधिक सीमित कर दिया। स्वयं गाड़ी चलाने के कारण प्राकृतिक नजारों को देखने और उनका आनंद लेने के अवसरों को लगभग खो दिया। उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में लगभग 13 वर्षों की सेवा के पश्चात मुझे उत्तराखंड के तराई में स्थित राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, ऊधम सिंह नगर में सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ।

बहरहाल, 30 अक्टूबर, 2023 को लगभग 13 वर्ष पश्चात पुनः रेलगाड़ी द्वारा यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। सोमवार की शाम को महाविद्यालय की छुट्टी के बाद मैं अपने एक मित्र (जो की एक दुर्घटना के कारण अस्पताल में भर्ती थे, उन्हें) देखने अपने साथी डॉ. खेमकरण सोमन के साथ काशीपुर पहुँच गया। हमारे अस्पताल पहुँचने के कुछ समय पूर्वी मेरा मित्र ऑपरेशन थिएटर से बाहर आया था। वह चेतन अवस्था में था और जैसे ही मैं अपने साथी के साथ कमरे में प्रवेश किया तो मेरे मित्र ने अवचेतन अवस्था में अपने अर्द्ध खुली आँखों में मेरी ओर देखा और उसके होठों पर एक मुस्कान छा गई। यह देखकर मुझे असीम संतोष का भाव उत्पन्न हुआ और मुझे लगा कि मेरा आना सार्थक हो गया। इसके पश्चात वहाँ पहले से ही उपस्थित मित्र के मित्र से बातचीत हुई जो पिछली रात को ही उसकी देख-रेख के लिए काशीपुर पहुँच गया था। तब मुझे जीवन में मित्र की भूमिका के महत्व का पुनः एहसास हुआ क्योंकि हम काशीपुर अपने शिक्षक साथी तक जैसे-तैसे पहुँछे थे, इसलिए देर रात वापस बाजपुर जाना हमारे लिए एक चुनौती था। इसी बीच मुझे रेलगाड़ी का ध्यान आया तो मैं तुरंत मोबाइल के माध्यम से ट्रेन की जानकारी प्राप्त की जिससे मुझे पता चला कि एक रेलगाड़ी शाम 8:32 पर काशीपुर से बाजपुर के लिए उपलब्ध है।

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि एक बार पुनः रेलगाड़ी से यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। मैं अपने मित्र से पुनः आने का वादा करके अपने शिक्षक साथी के साथ अस्पताल से बाहर निकाला और रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली ई रिक्शा की तलाश में हमारी निगाहें सड़कों पर दूर तक दौड़ गई। लगभग तीन-चार मिनट पश्चात एक टुकटुक [ई रिक्शा] आता दिखाई दिया जिसे रोकने का इशारा किया तो वह रुक गया। हमने उसे स्टेशन चलने और किराए के विषय में पूछा तो उसने हमें उसे शहर में अनजान समझते हुए लगभग तीन गुना किराया बताया। जब उसे दूरी और किराए के विषय में बताया तो वह उसने मुस्कुरा कर वास्तविक किराए पर हमें स्टेशन छोड़ने के लिए तैयार हो गया। लगभग 6-7 मिनट में ही हम स्टेशन पर पहुँच चुके थे। वहाँ पहुँचकर हमने पहले रेलगाड़ी की उपलब्धता के विषय में निश्चित हो जाने पर काशीपुर से बाजपुर का टिकट खरीद लिया।

टिकट की कीमत जानकर हम दोनों इस निष्कर्ष पर पहुँचें कि बढ़ती महंगाई के साथ-साथ रेलगाड़ी का सफर भी सस्ता नहीं रह गया। टिकट लेने के पश्चात हमें पता चला की रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर आएगी। हम दोनों जैसे ही प्लेटफार्म पर पहुँचें तो वही पुरानी और जानी-पहचानी

पकौड़े और समोसे की खुशबू हमारी नाक तक पहुँची। बस, फिर क्या कहने... हमारे मुँह में पानी आने लगे । हमने ललचाई दृष्टि से विभिन्न स्थलों पर रख पकौड़े एवं समोसे देखे, लेकिन गुणवत्ता और साफ-सफाई साहब भाई का विचार आने से हम दोनों में किसी ने भी कुछ खाने की इच्छा जाहिर नहीं की। जैसा कि भारतीय रेलवे हमेशा ही स्वयं को सार्थक करता है. आज भी किया कि आज की रेलगाड़ी भी अपने निर्धारित समय से लगभग 45 मिनट देरी से आएगी ।

तस्वीर में : डॉ. अनिल कुमार सैनी

रेलगाड़ी का देरी से आना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी लेकिन रेलगाड़ी की देर से आने के कारण मुझे प्लेटफॉर्म पर टहलने का अवसर प्राप्त हो गया । मैं अपने साथी के साथ प्लेटफॉर्म नंबर तीन के दूसरे छोर पर पहुँच गया। इन पिछले 13 वर्षों में जो पहले अंतर दिखाई दिया कि प्लेटफॉर्म अब स्वच्छता से जुड़ा हुआ था। अब प्लेटफॉर्म में पहले की अपेक्षा का विश्वास दिखाई दे रहा था। मैं अपने साथी के साथ अपनी यात्राओं से जुड़े अनुभव की चर्चा कर ही रहा था तभी प्लेटफार्म नंबर दो पर रामनगर की ओर जाने वाली रेलगाड़ी के आने की घोषणा हुई- सभी यात्री ध्यान दें । फिर कुछ ही मिनटों में रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म पर पहुँच गई तथा प्लेटफॉर्म पर अचानक गतिविधियाँ तेज हो गई। चाहे समोसे सामग्री के विक्रेताओं में एक नई ऊर्जा का संचार हो गया । रेलगाड़ी रुकने के बाद काफी संख्या में यात्री उतरकर अपने गंतव्य की ओर बढ़ने लगे । रामनगर की ओर जाने वाले यात्री रेलगाड़ी में सवार होकर अपने-अपने स्थान ग्रहण कर चुके थे लेकिन रेलगाड़ी अभी प्लेटफॉर्म नहीं छोड़ना चाह रही थी। लगता था उसे भी किसी का इंतजार इंतजार है। जैसा कि अकसर प्रतीक्षा में बेचैनी बढ़ जाती है, वैसे ही रेलगाड़ी का चालक भी इंजन की आवाज में वृद्धि कर हमारी बेचैनी बढ़ा देता था । हम दोनों ने इन गतिविधियों को देखा और उन पर चर्चा करने लगे कि तभी जिस रेलगाड़ी की हमें प्रतीक्षा थी, उसके आने की घोषणा हो गई- कृपया यात्रीगण ध्यान दें । हम दोनों भी एकाएक सतर्क हो गए और अंदाजा लगाने वालों की सामान्य बोगी लगभग किस स्थान पर आएगी तथा भीड़भाड़ वाले सामान्य बोगी में हम किस प्रकार स्थान बना पाएँगे । तभी रेलगाड़ी का इंजन परिचित ध्वनि के साथ हमारे सामने से गुजर गया।

हमने पाया कि सामान्य बोगी हमारे खड़े होने के स्थान से लगभग काफी आगे निकल चुकी थी लेकिन संतुष्टि थी कि इस बोगी में बहुत ही कम, लगभग 10 से 12 यात्री थे। हम दोनों तेज कदमों के साथ सामान्य बोगी की ओर बढ़े, और कुछ ही पलों में हम बोगी के अंदर पहुँच चुके थे। बोगी के अंदर चलते हुए हम बोगी के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँच गए, और खिड़की से लगी एक एकड़ सीट पर आमने-सामने बैठ गए । उसे कंपार्टमेंट में हम दोनों के अलावा लगभग 18-19 वर्ष का युवा भी बैठा था जो हम दोनों की आपसी हँसी चुटकुले को बहुत ही उत्सुकता से देख रहा था। तभी मुझे इस यात्रा को इस समय यात्रा की स्मृति को सजाने का विचार आया और मैं अपने सामने बैठे अपने साथी की अलग-अलग मुद्राओं में कई चित्र अपने मोबाइल में कैद करने के पश्चात अपने मित्र से अपनी

छायाचित लेने का संकेत करते हुए मोबाइल उसकी ओर बढ़ा दिया। मेरे साथी ने बड़ी ही तत्परता के साथ विभिन्न कोणों से मेरे कई छायाचित मोबाइल में कैद कर लिए। इस सब गतिविधियों को वह युवक जब बहुत उत्सुकता से देख रहा था। वह बोला कि इस दृष्टि- कोण से छायाचित्र ज्यादा प्रभावी और सुंदर आएगा। मेरे साथी ने तुरंत सेवा-शर्त स्वीकार करते कई छायाचित मेरे मोबाइल में कैद कर लिए। बाद में जब मैं इन चित्रों का अवलोकन किया तो पाया कि उसे युवक के निर्देशानुसार लिए गए छायाचित पूर्व में लिए गए छात्र छायाचित्रों से बेहतर और प्रभावी है। इससे यह बात प्रमाणित हुई कि नई पीढ़ी के युवा हमारी पीढ़ी से तकनीकी समझ में ज्यादा बेहतर है। इसके पश्चात उसे युवक से संवाद प्रारंभ हो गया और पता चला कि वह गोरखपुर का रहने वाला है और बाजपुर अपने चाचा के माध्यम से किसी महाविद्यालय से स्नातकोत्तर, विज्ञान वर्ग की परीक्षा देने आया है। उस युवक का अपना व्यवसाय भी है और पढ़ने-लिखने में उसकी कोई विशेष रुचि नहीं है. क्योंकि परिवार के कई सदस्य शिक्षक हैं इसलिए बस उनके कहने पर स्नातकोत्तर की परीक्षा दे रहा है। यह जानने के बाद हमारे मन में उत्सुकता ने जन्म ले लिया कि स्नातक-स्नातकोत्तर करने के लिए गोरखपुर से यहाँ आने की क्या व्यवस्था थी ?

उसने बताया कि वह अपने चाचा के परिचित द्वारा संचालित संस्थान से परीक्षा दे रहा है जिसमें केवल उत्तर पुस्तिका भरनी है तथा कुछ सहायकों द्वारा बोलकर भी लिखवाया जाता है ताकि कोई समस्या उत्पन्न न हों। मै सोचने लगा कि इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी स्वतः ही भ्रष्टाचार की पुष्टि हो जाती है। जब इस प्रकार के भ्रष्ट शिक्षा तंत्र से ऐसे युवक तैयार होकर निकलेंगे तो जग जाहिर है कि वह किस प्रकार का समाज निर्माण करेंगे। खैर, इस वार्तालाप में कब बाजपुर आ गया, पता नहीं चला। रेलगाड़ी से उतरने से पूर्व जब हमने अपना परिचय दिया कि हम राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं, तो वह थोड़ा चौंका, फिर मुस्कुराते हुए टिप्पणी की- आप दोनों बहुत स्मार्ट हैं।

किताब

कविता संग्रह : नई दिल्ली दो सौ बत्तीस किलोमीटर
प्रकाशक : समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून
संस्करण : 2022

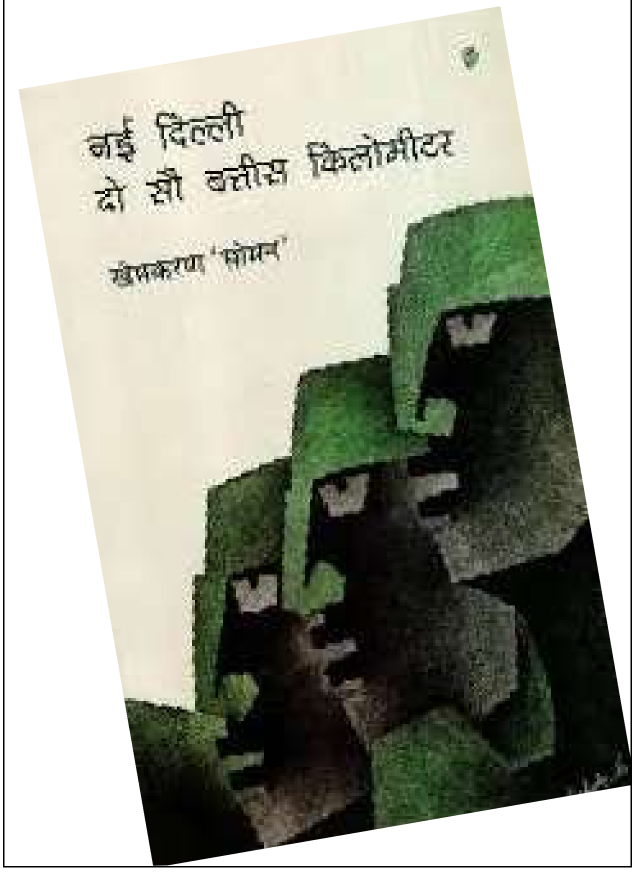

आलेख

फ्रांस की क्रांति, बैस्टिल का पतन और जनतंत्र की आहट

दीपक कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, ऊधम सिंह नगर

14 जुलाई 1789 ई. को फ्रांस में एक ऐतिहासिक घटना घटित होती है, जिसे विश्व इतिहास में फ्रांस की क्रांति या बैस्टिल का पतन और बैस्टिल दिवस के रूप में मनाया जाता है। जो दुनिया में लोकतंत्र के स्थापित होने की पहली आहट के रूप में जाना जाता है । दरअसल इससे पहले निम्न वर्ग दबा हुआ था । उस समय राजतन्त्र में राजा, कुलीनवर्ग और चर्च शक्तिशाली निकाय हुआ करते थे जो आम लोगों को हर तरीके से दबाया करते थे। निम्न वर्ग के पास संख्या तो थी परंतु चेतना, लीडरशिप और योजना का अभाव था। जिस वजह से वह अपने कष्ट के निवारण हेतु कुछ कर नहीं पाए। 18 वीं सदी तक यूरोप में एक मध्यवर्ग उभर चुका था । औद्योगिक क्रांति के कारण इस वर्ग के पास आर्थिक क्षमता भी बढ़ती गई । जिसके कारण इस सदी में इस वर्ग ने अपनी उपस्थिति को महसूस कराया और राजतन्त्र, कुलीनतंत्र और चर्च को चेतावनी दी कि, वे स्वयं को बदलें नहीं तो मध्यवर्ग इस स्थिति को लंबे समय तक बर्दाश्त नहीं करेंगे।

तस्वीर में : दीपक कुमार

असल में मध्यवर्ग की यह शिकायत थी कि उनकी बेहतर आर्थिक स्थिति होने के बाद भी वह सम्मान प्राप्त नहीं है जो पादरीवर्ग और कुलीनवर्ग को प्राप्त है। "फ्रांस की क्रांति से पूर्व फ्रांस की कुल जनसंख्या ढाई करोड़ थी, जिनमें से लगभग ढेड़ लाख पादरी और लगभग एक लाख चालीस हजार सामंत थे। इतनी कम जनसंख्या होते हुए भी उच्च वर्ग के लोग अधिकारों, सुविधाओं एवं जीवन स्तर की दृष्टि से शेष 99 प्रतिशत देशवासियों से बहुत आगे थे। अनुमान लगाया गया है कि जागीरदारों एवं चर्च के धर्माधिकारियों में प्रत्येक के पास फ्रांस की समस्त संपत्ति का पाँचवाँ भाग था। फिर भी ये दोनों वर्ग कर से मुक्त थे और साधनहीन तृतीय वर्ग के लोगों को करों से लाद दिया गया।"[1] कर का भार मध्य वर्ग और निम्न वर्ग पर था। ऐसे में वह कर व्यवस्था को परिवर्तन करना चाहते थे । लुई सोलहवें (1774–1791 ई.) के समय राज्य की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी दूसरी ओर मध्य वर्ग कर असमानता का विरोध कर रहा था। यही कारण था कि 175 वर्ष से फ्रांस की संसद स्टेट जनरल का सत्र नहीं हुआ था, परंतु कर को लेकर सत्र का आयोजन हुआ।

कुलीन वर्ग, पादरी वर्ग ने कर व्यवस्था में परिवर्तन को लेकर विरोध किया । निम्न वर्ग को अनुमति न होने के कारण इस सत्र में मध्य वर्ग ने ही निम्न वर्ग का भी प्रतिनिधित्व किया परंतु कर व्यवस्था पर सहमति न बन पाने के कारण मध्य वर्ग स्टेट जनरल के पास स्थित टेनिस कोर्ट में आ गए और कुलीन और पादरी वर्ग को अस्वीकार करते हुए 17 जून 1789 ई. को अपने आप को राष्ट्रीय सभा घोषित कर दिया। राजा लुई सोलहवें ने आर्मी और पुलिस को आदेश दिया कि टेनिस कोर्ट के विद्रोह को दबाकर मध्य वर्ग को वहां से भगा दिया जाए और टेनिस कोर्ट को खाली किया जाय। परंतु उसी समय कथित निम्न

वर्ग मजदूर, किसान, मेहनतकशवर्ग और शिल्पकारों आदि पेरिस स्थित टेनिस कोर्ट की ओर दौड़ पड़े ताकि मध्य वर्ग का सहयोग किया जा सके। जब तक आर्मी और पुलिस पहुँचती, तब तक टेनिस कोर्ट को हजारों लोग घेर चुके थे। पुलिस लाचार हो गई और निम्न वर्ग ने मध्य वर्ग के लोगों को बचा लिया। 'लेकिन इतिहास में जो लड़ाइयाँ हुई हैं, उसमें बड़ी चालाकियाँ हुई हैं।'

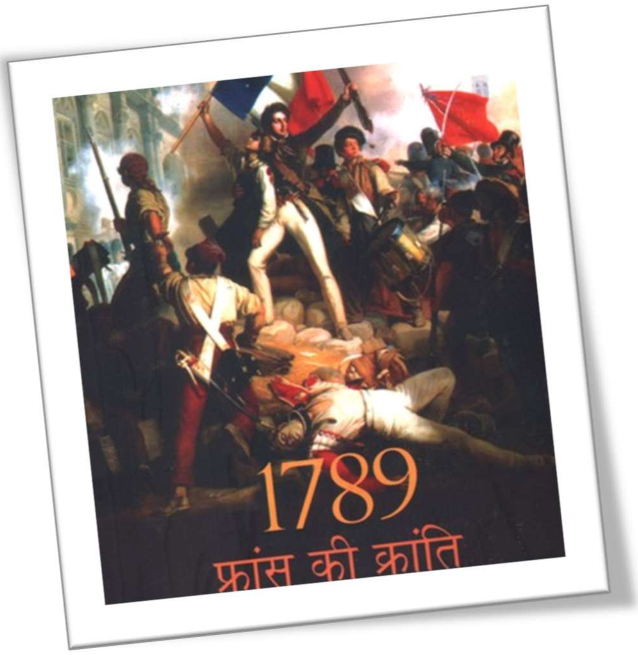

यहाँ भी निम्न वर्ग के साथ वहीं चालाकियाँ हुई। दरअसल मध्य वर्ग फ्रांस में सुधार तो चाहता है लेकिन क्रांति नहीं चाहता है। क्यों ? क्योंकि एक ओर मध्य वर्ग राजतन्त्र, चर्च, पादरीवर्ग और कुलीनवर्ग से लड़कर अपना अधिकार लेना चाहता है वही दूसरी ओर मध्य वर्ग यह नहीं चाहता कि शक्ति अपने से नीचे तबके तक पहुंचे अर्थात् निम्न वर्ग तक। मध्य वर्ग का कहना था सरकार जनता के लिए होनी चाहिए न कि जनता द्वारा होनी चाहिए। क्योंकि जनता द्वारा होगी तो मध्य वर्ग का कहना था लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था स्थापित हो जाएगी। प्रजातन्त्र से मध्यवर्ग को खौफ था। वह एक व्यक्ति, एक वोट नहीं चाहते थे अपितु सीमित मताधिकार का समर्थन करते थे एवं चाहते थे कि मध्य वर्ग वोट दे परंतु निम्न वर्ग को मतदान का अधिकार न हो। वही दूसरी ओर कथित निम्न वर्ग मध्य वर्ग की ओर बड़े भैया की तरह देख रहा था कि वह अपने साथ – साथ उनके बारे में भी सोचे परंतु मध्य वर्ग की यहाँ गुप्त योजना थी कि राजतन्त्र और कुलीनतंत्र और चर्च से लड़कर अधिकार लें और उन अधिकारों को केवल अपने तक आने दें। परंतु निम्न वर्ग तक नहीं जाने दें और उन्हे ठगते और बेवकूफ बनाते रहे ,जिससे उनकी लड़ाई में निम्न वर्ग शामिल रहे। क्योंकि मध्य वर्ग लोकतंत्र का समर्थक नहीं था और इनका मानना था कि निम्न वर्ग तक अधिकार पहुँचने पर प्रजातन्त्र की स्थापना हो जाएगी।

1789 ई. में जब क्रांति हुई तो इसका नेतृत्व मध्य वर्ग कर रहा था। जबकि निम्न वर्ग , मध्य वर्ग पर दबाव बनाए हुए था कि उग्र सुधार हो और क्रांति हो। पेरिस की भीड़ अर्थात् निम्न वर्ग थोड़े अधिकार का समर्थन नहीं बल्कि क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते थे। पेरिस में बास्तील का किला था जो निर्दोष लोगों के साथ जेल में क्रूरता, अत्याचार और निरंकुशता का प्रतीक था। आम लोग इसी बास्तील में घुसे सभी बंदियों को रिहा किया तथा किले को तहस नहस कर अपने से ही राजतन्त्र के विनाश की घोषणा कर दी। इसका मतलब था पहली बार लोगों ने राजनीति में कदम रखा अर्थात् लोकतंत्र की दिशा की ओर पहला कदम रखा इसीलिए यह प्रतीक था की भविष्य में लोकतंत्र आने वाला है। "फ्रांस की 1789 ई. क्रांति एक राष्ट्रीय घटना नहीं थी अपितु इसके सिद्धांतों – स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व के नारों से सम्पूर्ण यूरोप गूंज उठा। इसीलिए यह कहा जाता है कि यह अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का आंदोलन था, जिसके उदय होने से फ्रांस यूरोपीय इतिहास का केंद्र बन गया।"[2] जिससे सम्पूर्ण यूरोप में लोकतान्त्रिक मूल्यों और जनमत के निर्माण का प्रसार हुआ जिसने लोकतंत्र के आने वाले भविष्य की नींव रखी। हालांकि इतिहास के इस मोड़ पर चंद दिनों के लिए फ्रांस में गणतंत्र टिक पाया अर्थात् निम्न वर्ग के हाथ में सत्ता रही। क्योंकि निम्न वर्ग उतना संगठित नहीं था। जबकि मध्य वर्ग संगठित था, उसने फ्रांस की क्रांति को हाईजैक कर लिया और नेपोलियन वोनापार्ट मध्य वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में आया। निम्न वर्ग ने समय–समय पर मध्य वर्ग का साथ दिया परंतु मध्य वर्ग ने उसके साथ धोखा किया। 19 वीं

सदी में मार्क्स के रूप में निम्न वर्ग को अपना नेता मिला। 1848 ई. में मार्क्स ने कम्युनिस्ट घोषणा पत्र के तहत आह्वान किया कि दुनिया के श्रमिकों का एकमात्र लक्ष्य है दुनियाँ से पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना और समाजवाद को स्थापित करना। जिससे वर्ग विभेद पर आधारित पूंजीवादी समाज को समाप्त कर सर्वहारा वर्ग के शासन की स्थापना की जा सके और सभी को स्वतंत्र रूप से अपने विकास करने का अवसर मिले।

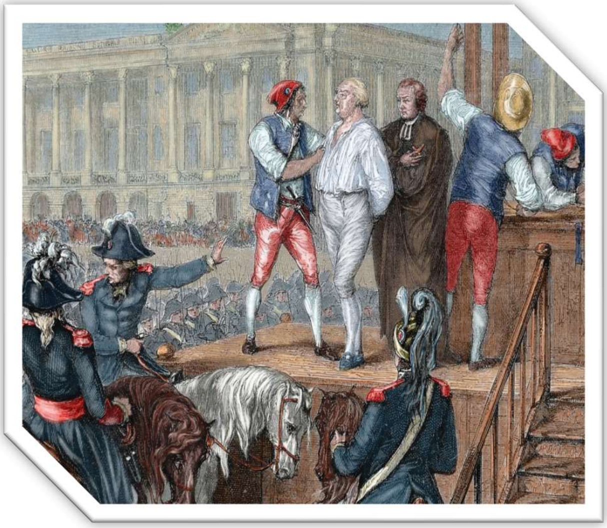

मार्क्स ने कहा था "श्रमिकों के पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है, केवल बेड़ियाँ हैं तथा पाने के लिए संसार है। इसीलिए दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ।"[3] यहाँ से निम्न वर्ग मध्य वर्ग से अलग हो गया। कुलीन वर्ग के साथ मिलकर मध्य वर्ग ने निम्न वर्ग को मताधिकार जैसे लोकतंत्र के मूल तत्व और उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा। परंतु 1917 ई. में रूस की क्रांति हुई। निम्न वर्ग ने सत्ता का स्वाद चखा। जार का पतन हुआ। रूस में पहली बार श्रमिक सरकार स्थापित हुई। इसी का परिणाम था कि पूरी दुनियाँ में पूंजीवादी नेता और मध्य वर्ग को अब लगने लगा कि यदि मताधिकार और अन्य अधिकारों से निम्न वर्ग को वंचित रखा गया तो हो सकता है कि उनकी प्राइवेट संपत्ति उसी तरह छीन ली जाए जैसे रूस में पूँजीपतियों और जमीदारों की छीन ली गई। क्योंकि जिस आधुनिक लोकतंत्र की शुरुवात पश्चिमी देशों में 18 वीं, 19 वीं सदी में हुई उस लोकतान्त्रिक व्यवस्था में समान मताधिकार, प्रतिस्पर्धा और समान प्रतिनिधित्व सभी को प्राप्त नहीं था। महिलाओं और कथित निम्न वर्ग को इन अधिकारों से वंचित रखा गया। ऐसे में पूँजीपतियों और जमीदारों का डर लाजमी था। इसी का परिणाम था कि 1919 में अमेरिका में, 1928 में इंग्लैंड, 1945 में फ्रांस में महिलाओं एवं सभी नागरिकों को समान मताधिकार प्रदान किया गया।

इन्हीं क्रांतियों ने दुनिया में लोकतंत्र को पहुंचाने, उनके निरंतर विकास और उसे मजबूत करने में मील के पत्थर के रूप में भूमिका निभाई और लोकतंत्र के विचार को पूर्ण अभिव्यक्ति मिली और लोकतंत्र का विस्तार समाज के अंतिम व्यक्ति तक मताधिकार के माध्यम से पहुंचा। इन क्रांतियों से आए लोकतंत्र में सुधारों के बाद भी लोकतंत्र का विकास व सुधार क्रमबद्ध जारी रहा। पश्चिमी जगत से बाहर 20 वीं सदी के मध्य में लोकतंत्र का प्रभाव एशिया और अफ्रीकी देशों में भी दिखने को मिला और साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से लड़ते हुए आजादी पाई तथा अपने मुल्क में लोकतंत्र और गणतंत्र की स्थापना की। अतः फ्रांस की क्रांति ने समाज के अंतिम व्यक्ति को यह साहस दिया कि उसे अपने अधिकारों की लड़ाई स्वयं लड़नी होगी न कि किसी पर निर्भर होकर।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक विश्व का इतिहास (1500-2000 ई. तक) जैन एवं माथुर, पेज न.184, जैन प्रकाशन मंदिर , चपलावत जैन मैन्सन मंदिर, सिन्धी जी गली, चौरा रास्ता जयपुर 302003, 21 वां संस्करण 2015
2. आधुनिक विश्व का इतिहास (1500-2000 ई. तक) जैन एवं माथुर, पेज न.211, जैन प्रकाशन मंदिर, चपलावत जैन मैन्सन मंदिर, सिन्धी जी गली, चौरा रास्ता जयपुर 302003, 21 वां संस्करण 2015
3. राजनीति विज्ञान एक समग्र अध्ययन, राजेश मिश्रा, ओरिएंट ब्लैकस्वॅान प्रा. लि., सातवाँ संस्करण 2020, पेज न. 129, हिमायतनगर, हैदराबाद, 500029 तेलंगाना, भारत।

आलेख

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका

रीना

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा रीना, शिक्षा के क्षेत्र में जाकर देश_समाज की सेवा करना चाहती हैं। उन्हें टीवी देखना, घूमना और लिखने-पढ़ने में गहरी रुचि है।

आज मैं बात करने जा रही हूँ उन महान शख्सियत की जो महिलाओं के लिए एक बहुत बड़ी मिसाल है, और निश्चित ही अपने देश के लिए उनके बलिदान को रानी लक्ष्मीबाई से कम नहीं आंका जा सकता। इन्होंने अपना पूरा जीवन दलितों की सेवा तथा उनके लिए उनका हक दिलाने में स्वयं को समर्पित कर दिया। जी हाँ, आप सही समझ रहे हैं। मै बात कर रही हूँ सावित्री बाई फुले की।

3 मई 1831 को महाराष्ट्र में जन्मी सावित्रीबाई फुले भारत की पहली महिला शिक्षिका थीं, जिनका जन्म एक दलित परिवार में हुआ। इनके समय महिलाओं को शिक्षा से पूरी तरह वंचित रखा जाता था। समाज के लोग नारी शिक्षा को पाप समझते थे। इसके विपरीत सावित्रीबाई फुले को पढ़ने की बहुत ही लालसा थी। वह पढ़ना चाहती थी परंतु उन्हें पढ़ने की अनुमति न दी गई। मात्र 9 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह ज्योतिबा फुले जी के साथ कर दिया गया। उस समय ज्योतिबा फुले की उम्र भी मात्र 13 वर्ष की थी। सावित्रीबाई फुले के पति ज्योतिबा फुले एक महान व्यक्ति और एक महान समाज सुधारक रहे, जिन्होंने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की।

भारत के इतिहास का यह वह समय था जब समाज में कुप्रथाएँ बुरी तरह व्याप्त थी। इनका प्रथाओं के कारण दलितों का अत्यधिक शोषण होता था शादी के बाद भी सावित्रीबाई फुले की पढ़ने की लालसा काम ना हुई और ज्योतिबा फुले ने उनकी पढ़ाई में उनका पूरा सहयोग किया परंतु घर वालों को यह बिलकुल भी गवारा नहीं था कि उनके घर की बहू बेटियाँ पढ़ें। ज्योतिबा फुले घर वालों से छिपकर अपनी पत्नी को पढ़ाया करते, परंतु एक दिन सभी को इस बात का पता लग गया और दोनों को ही घर से बाहर निकाल दिया गया। घर से बाहर निकाल देने के बाद उन्हें बहुत ही मुसीबतों का सामना करना पड़ा। संकट की इस घड़ी में उनकी सहायता ज्योतिबा फुले के एक मित्र ने की। 1948 में इन्होंने भारत में महिलाओं के लिए पहला विद्यालय खोला, जिसमें 9 जातियों की लड़कियाँ पढ़ने गईं। ऐसा करने पर समाज के लोगों ने उनका पूरी तरह विरोध किया।

जब वे पढ़ने के लिए विद्यालय जातीं तो उनके ऊपर कीचड़ पत्थर फेंकें जाते। इससे उनके कपड़े पूरी तरह खराब हो जाते। इसीलिए वह अपने थैली में एक साड़ी रखकर ले जाया करती और विद्यालय जाकर बदल दिया करती इतना संघर्षपूर्ण जीवन होने के बावजूद भी उन्होंने अपने जीवन के हर कठिनाइयों का हँसकर सामना किया और एक वर्ष के भीतर ही पाँच विद्यालयों की स्थापना कर दी।

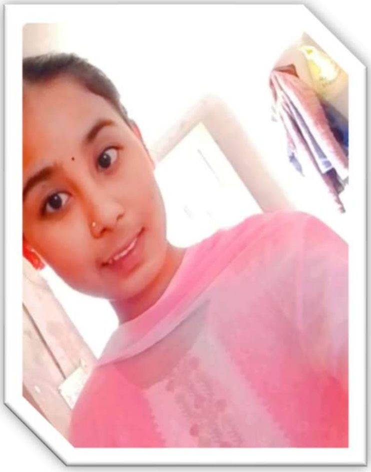

तस्वीर में : रीना

सावित्रीबाई फुले और उनके पति ज्योतिबा फुले दलितों के ऊपर हो रहे अत्याचार के खिलाफ थे । इन्होंने सती प्रथा बाल विवाह छुआछूत जैस कुप्रथाओ का पूर्ण पूरा विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया । इस प्रकार सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने अपना पूरा जीवन दलितों की सेवा के लिए न्योछावर कर दिया । 1897 में भारत में प्लेग नामक बीमारी ने अपने पैर पसार लिए । लोगों की सेवा करते समय सावित्रीबाई फुले भी इस रोग से ग्रसित हो गई, और 10 मार्च 1897 में माता सावित्रीबाई फुले ने अपनी अंतिम साँस ली । इस समय वह हमारे बीच मौजूद न होकर भी अपने महान कार्यो और प्रयासों के लिए हम सभी के दिलों में विद्यमान है।

लघुकथा

वह लड़की है

डॉ. खेमकरण 'सोमन'

वह लड़की है। वह जानती थी कि वह लड़की है। घर वाले भी जानते थे कि वह लड़की है। इसके अलावा आसपास के लोग भी जानते थे कि वह लड़की है। गली-मोहल्ला, दुनिया-जहान भी जानते थे कि वह लड़की है।

वह लड़की है, शायद इसलिए घर के लोगों सहित अन्य लोगों की नजरें भी उस पर थीं-
कहाँ जाती है?
कहाँ से आती है?
क्या खाती है?
क्या पीती है?
क्या पहनती है?
क्या ओढ़ती है?

अकसर उसके कानों में कुछ-कुछ एहसास कराने वाला यह वाक्य पहुँचता, ''याद रख तू लड़की है।''
एक दिन उसने सोचा कि यह वाक्य -''याद रख तू लड़की है, मेरा मनोबल बढ़ा रहा है या घटा रहा है ?''
खैर, इस बारे में उसने ज्यादा न सोचा। बस पढ़ाई, खूब पढ़ाई करने में ही मगन रही और...!

और आज देखिए कि आज के सारे अखबारों के पहले पन्ने पर बस वही छायी है! आखिर... सिविल सेवा परीक्षा में उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया है।
उसके माता-पिता तो समझ ही नहीं पा रहे थे कि यह हो क्या रहा है? बधाई और शुभकामनाएँ देने वालों का ऐसा तांता लगा कि... फिलहाल अब वे बहुत खुश हैं।
पत्रकारों ने इण्टरव्यू में पूछा-''दिव्यदर्शिनी जी बधाई! लेकिन इतना बड़ा काम आपने किया कैसे ?''
वह बोली-''बस यही याद रखती रही कि मैं एक लड़की हूँ।''

बातचीत अभी भी चलती रहती है। लोग कहते हैं-''वाकई, वह एक लड़की है।''
कुछ लोग कहते हैं-''भाई, हमने देखा है- उसका आना-जाना, खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना।''

(लघुकथा.कॉम से साभार)

आलेख

गुरुत्वाकर्षण और अंधकार

डॉ. योगेश पांडे

डॉ. योगेश पांडे, भौतिक विज्ञान के असिस्टेंट प्रोफेसर हैं, और समावेश के तकनीकी संपादक भी। शोध एवं नवाचारी शिक्षा के क्षेत्र में उनसे बहुत उम्मीद है।

परिचय:

शिक्षा का महत्व एक समझौता नहीं है। यह न केवल हमें ज्ञान और समझ की शक्ति प्रदान करता है, बल्कि हमें अपने जीवन में सफलता की ओर ले जाता है। गुरुत्वाकर्षण हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, जबकि अंधकार हमें रास्ते से हटा देता है। इस लेख में, हम विचार करेंगे कि गुरुत्वाकर्षण और अंधकार कैसे शिक्षा के क्षेत्र में प्रभाव डालते हैं।

गुरुत्वाकर्षण: शिक्षा के प्रेरणास्रोत

गुरुत्वाकर्षण वह शक्ति है जो हमें सही दिशा में ले जाती है। एक अच्छा गुरु हमें उन सूचनाओं और प्रेरणाओं के साथ प्रदान करता है जो हमारे जीवन को सफल बनाने के लिए आवश्यक होते हैं। गुरुत्वाकर्षण का यह अहम तत्व हमें स्वयं को समर्थ बनाता है, हमारी सोच को बदलता है और हमें नई ऊँचाइयों की ओर ले जाता है। गुरुत्वाकर्षण न केवल हमारे व्यक्तित्व को विकसित करता है, बल्कि हमारे समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अंधकार: शिक्षा का विघ्न

अंधकार एक ऐसी शक्ति है जो छात्रों को असफलता की दिशा में खीच सकती है। यह उन्हें उनके लक्ष्यों की ओर से हटा देता है और उन्हें स्वयं के क्षमताओं पर संदेह करने के लिए मजबूर करता है। छात्र जब अपने अंधकार में फंस जाते हैं, तो वे अपनी आत्म-संदेही के चक्र में फंस जाते हैं, जो उनके विकास को रोक सकता है।

गुरुत्वाकर्षण और अंधकार का प्रभाव:

1. शिक्षार्थी की ऊर्जा के स्तर पर प्रभाव: गुरुत्वाकर्षण से छात्र ऊर्जावान होते हैं, जबकि अंधकार से वे असंतुष्ट और निराश हो सकते हैं।
2. अध्ययन की प्रेरणा: गुरुत्वाकर्षण छात्रों को अध्ययन में प्रेरित करता है, जबकि अंधकार उन्हें पढ़ाई से भागने की प्रेरणा देता है।
3. स्वाध्याय का महत्व: गुरुत्वाकर्षण से छात्र स्वाध्याय की ओर प्रेरित होते हैं, जबकि अंधकार उन्हें अपनी क्षमताओं पर संदेह करने के लिए मजबूर करता है।

तस्वीर में : डॉ. योगेश पांडे

छात्रों की प्रतिबद्धता:

1. उत्साह: छात्र उत्साही होने चाहिए और नए ज्ञान की तलाश में प्रेरित होने चाहिए।
2. स्वीकृति: वे अपनी क्षमताओं को स्वीकार करने चाहिए और अपने अंदर के गुणों का सम्मान करने चाहिए।
3. समर्थन: छात्रों को शिक्षा, निष्पक्षता, समर्थन और प्रेरणा प्रदान करने वाले गुरुओं की आवश्यकता होती है।

संगतता की महत्वपूर्णता:

1. सही मार्गदर्शन: छात्रों को उनके मार्गदर्शकों का चयन करना आवश्यक है, जो उन्हें सही दिशा में ले जाएँ।

2. स्वाध्याय: छात्रों को स्वाध्याय का महत्व समझाना चाहिए, जिससे वे अपने आत्म-विकास में सक्षम हों।
3. प्रेरणा: गुरु छात्रों को प्रेरित करने और उन्हें नए उद्देश्यों की ओर ले जाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समापन:

गुरुत्वाकर्षण और अंधकार दोनों ही महत्वपूर्ण तत्व हैं, जो शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को प्रभावित करते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र अपनी शिक्षा में सफल हों, उन्हें सही मार्गदर्शन, संगतता और समर्थन की आवश्यकता होती है। गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से और अंधकार को पहचानकर, छात्र अपने स्वप्नों की ओर अग्रसर हो सकते हैं और अपने जीवन में सफलता की गहरी नींव रख सकते हैं।

कविता

घर

के. सच्चिदानंदन
[मलयालम के कवि, साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित ।]

घर एक जंतु है, फेफड़े जिसके
देह के बाहर हैं
इसीलिए उसको
बुख़ार आ जाता है
ज़रा-सी धूप
या ज़रा-सी सर्दी में
यूँ ही रही अगर आब-ओ-हवा ये

यह मर भी सकता है।

किताब

किताब : **साहित्य और अश्लीलता का प्रश्न**
प्रकाशक : **भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली**
संस्करण : **2023**

कविता खंड

उज़मा खान

विजय जोशी

सपना

महेंद्र सिंह बोहरा

दोस्ती

उजमा खान,
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

एक ऐसा इनसान
जो हमें
अचानक
मिल जाता है

हमारी ज़िंदगी
का
हिस्सा
बन जाता है

कहते हैं
हम उसे
प्यार से
दोस्त

लोगों के लिए
बाहर वाला
लेकिन
हमारे लिए अपना
खास बन जाता है

कुछ लोग कहते हैं
कि
दोस्ती
बरबाद भी कर देती है

अगर मिल जाए
साथ निभाने वाला
तो हमें,
ये दुनिया
याद करती है।

विजय कुमार,
प्रयोगशाला सहायक (उपनल)

चलो रास्ते बनाते हैं

भरी दुनियों ने की ज़ाहिर के एक ख्वाहिश है
हमने पूछा कि क्या कर सकते हैं हम आप के लिए।
तो वो बोली के जन्नत ही रास आएगी हमको
हमने बोला के चलो रास्ते बनाते हैं।

हमने संग-संग में खोदा, पाटा रास्ता सारा
और बना दी सीढ़ियाँ उन सफेद पोशों के लिए।
महज एक सीढ़ी की कमी थी रह गई यारों
वो हम पर पैर रखके चल दिए सफर के लिए।

दबी ख्वाहिश के पीछे

दबी ख्वाहिश के पीछे साँस लेता है कोई
बेवजूद होके भी मुझे भाँप लेता है कोई।
खयाल उसका है या के मेरा
मगर जहन में मेरे झाँक लेता है कोई।

उनसे मिलने की तमन्ना है, कहाँ ढूँढू उनको
सख्त खामोशी में मुझको आवाज देता है कोई।
भरी तनहाई में दिल के बहलाने के लिए
कुछ एक पल में कहीं खाँस लेता है कोई।

कविता खंड

अंकुरित बीज

सपना की कविताएँ बहुत आशाएँ जगाती हैं। भाषा-शैली और शिल्प, हर स्तर पर उनका श्रम दिखता है। भविष्य में उनसे बहुत उम्मीद है। समावेश की ओर से शुभकामनाएँ।

सपना
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

बीज

जिस प्रकार एक वृक्ष की उत्पत्ति
सर्वप्रथम एक बीज से उत्पन्न होती है।
उसी प्रकार एक व्यक्ति के द्वारा ही
परिवार, परिवार से कुल से वंश की उत्पत्ति होती है।
अर्थात हमारे पूर्वज ही हमारी उत्पत्ति का बीज या जड़ हैं।
इसके लक्षण
हर व्यक्ति में विद्यमान होते हैं,
जो हमारे परिवार की नींव हैं।

जड़

जिस प्रकार किसी बीच के अंकुरित होने के पश्चात वह अपनी पकड़ मिट्टी के कण-कण में बनता है। और उस वृक्ष की उत्पत्ति और तीव्र विकसित होती है। ठीक उसी प्रकार किसी व्यक्ति का उदय के पश्चात उसका विकास होता हैं। जैसे किसी वृक्ष की जड़ का एक-एक तना बढ़ता है।

उसे प्रकार वह व्यक्ति की अवस्थाएं भी विकसित होती हैं। तथा वह कुटील होता जाता हैं। अपने आप को शारीरिक-मानसिक व पारिवारिक, सामाजिक तौर तरीकों से डालता है। तथा संसार में अहम भूमिका का निर्वाह करता हैं। वह अपनी सभी अवस्थाएं जैसे -शैशवावस्था, शिशु अवस्था, युवावस्था, प्रौढ़ अवस्था, वृद्धावस्था बढ़ती है। उसी प्रकार वह क्रियाकलापों में विकसित होता जाता हैं।

पत्ते

जिस प्रकार एक वृक्ष से छोटे-छोटे पत्तों की उत्पत्ति होना प्रारंभ होता हैं।
उसी प्रकार परिवार की नव, नीव वृक्ष के पत्तों के समान होता हैं।
जिस प्रकार एक-एक पत्ता मिलकर एक वृक्ष को हरियाली प्रदान करता हैं।
उसी प्रकार प्रथम व्यक्ति से उत्पत्ति एक-एक नीव, वंश व कुल का उदय निर्माण करता है।
तथा समाज को आगे बढ़ता है, और अपने विकास की ओर बढ़ता है।

फूल-फल

जिस प्रकार एक वृक्ष अपनी समस्त सफलताओं के कारण हर चरण को प्राप्त करते हुए।
फूल, पुष्प वह फल की उत्पत्ति करता हैं।
उसी प्रकार एक परिवार संसार में विभिन्न क्रिया करके एक परिवार में सुख, शांति, प्रेम का जीवन प्राप्त करता है।
तथा समाज की आवश्यकताओं को प्राप्त करके अपने जीवन को सुखी बनाता है।

तना

जिस प्रकार एक वृक्ष का तना बढ़ता हैं। तने बढ़ने पर ही वह वृक्ष का आकार लेता हैं।
उसी प्रकार व मुख्य व्यक्ति उस परिवार का तना है।
तथा इसी प्रकार उस व्यक्ति का परिवार हर प्रकार से व्यक्तियों, समूह, समुदाय की ओर अग्रसर होता हैं, तथा समाज में अपनी क्रियाएँ व्यक्त करता हैं।
समाज में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करता है।
अपनी स्थिति बनाता है ।

महेंद्र सिंह बोहरा
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

[कला संकाय अध्यक्ष 2023-2024]

भाग-दौड़ में व्यस्त है जीवन

भाग-दौड़ में व्यस्त है जीवन
बदल गया परिवेश है।

सफल हुए तो खुश सारा जग
वरना मन में द्वेष है।

किसको मन की बात सुनाऊँ
झूठे सबके फेस हैं।

घर की इच्छा बनूं सरकारी
बहुत ही लंबी रेस है।

सामान्य वर्ग का लड़का हूँ मैं
बड़ा ही सीरियस केस है !

रोना आता हालातों पर
लेकिन
जीवन सुख-दुख का ही समावेश है।

मेरे पिता...

सपना

नेहा

पूजा कश्यप

01

सपना
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

मैंने जब जन्म लिया तो सबने कहा लड़की है। पापा ने मुस्कुराकर देखा तो कहा कि मेरी शहजादी है। मैं गिरती तो पापा हाथ पकड़कर चलाते। मुझे चलते हुए देख इतना खुश होते जैसे सारी दुनिया मुझ में समाई हो। पैर मैं उठाती पर चलना पापा सीखाते। जिद्द मैं करती। फिर भी पापा मुझे मनाते। सबसे लड़ती मैं तो पापा प्यार से मुझे समझाते। पापा से गुस्सा होती तो नई चीज लाकर खिलाते। मेरी पढ़ाई के लिए वह रात को भी काम पर जाते। पढ़ती मैं हूँ पर मेरी किताबों का बोझ पापा उठाते। मुझे खुश देखने के लिए हर त्यौहार पर नए-नए कपड़े दिलाते। मेरी हँसी देखकर ही वह खुश हो जाते। कभी स्कूल की फीस ज्यादा हो तो हँसकर सिर हिलाते। अगले दिन कहीं से भी मेरी फीस जमा कर जाते। मेरे आँसू देखकर वह सब से लड़ जाते हैं। हर जन्म में मुझे यही पापा मिले, बस इतना ही भगवान से माँग है मेरी।

कुछ यादें बचपन की। वो बचपन का भी क्या जमाना था। जो चीज का बहाना लेकर पापा के साथ घूमने जाना था।एक चीज के लिए आँसू बहाते थे। दो चीज पाकर कितना खुश हो जाते थे। लाड़- प्यार में कोई कमी न थी। इसलिए बचपन से हमारी शरारतें किसी से कम न थी। शरारत बढ़ने पर मार भी खाते कहते थे पर पापा रोता देखकर 5 का सिक्का दे जाते थे। फिर आँसू पोंछकर पापा की ओर खुलकर हंस देते थे। प्यार से आवाज देकर पीछा पकड़ लेते थे। घूमाने ले चलो पापा। बच्चे बहुत जिद्दी थे हम पर पापा के प्यार छोटे बच्चे पीते थे हम। पर पापा के छोटे प्यारे पिद्दी थे हम। त्यौहार पर सारा सामान आना था। पर अपनी मर्जी की चीजें रोकर माँगना था। पहले पापा खूब रुलाते। फिर हाथों में खूब सारी चीज रख जाते।वह किताबों के लिए पैसे माँगते थे। कुछ किताबें खरीदते आधे पैसे खा जाते। फिर पापा के सामने मायूसी का चेहरा दिखाते। साइकिल देखकर ही कितना खुश हो जाते। पापा अब झुलायेंगे यह सोचकर चिपक जाते। रास्ता ऐसे रोकते थे। कि कोई न जाने पाए।आज के झूलों में भी वह मजा नहीं जो साइकिल पर पापा के झुलाने पर आता था। पापा के लिए - आसमान को कितना भी नाप लो।वह कभी छोटा नहीं होता। इस दुनिया में बस एक पिता है जिनका प्यार कभी झूठा नहीं होता।

वो पन्ना ही क्या जो किताब से यूंही छूट जाए। वो बच्चे ही क्या जो पिता से यूंही रूठ जाएं।
मेरे आँसू भी कम है। उनका दर्द बताने के लिए। कितना पसीना बहाया है। उन्होंने वजन उठाने के लिए। बस हमें एक समय का खाना खिलाने के लिए।

02

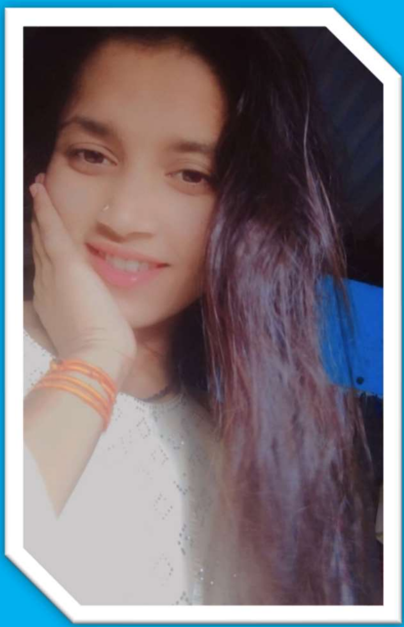

नेहा
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

वह हमेशा अपने पिता के साथ रहना चाहती है। अपने पिता के बारे में बहुत ज्यादा सोचती है। वह अपने पिता से कभी ज्यादा डिमांड नहीं करती। उसके पिता उसे जो देते हैं वह खुशी-खुशी उसे रखती है। अपने पिता से वह बहुत प्यार करती है। उसकी नजरों में उसके पापा दुनिया के सबसे अच्छे पापा हैं, वह इसलिए क्योंकि उसने अपने पापा को हमेशा काम करते देखा है। अपने परिवार का ख्याल रखते देखा है । परिस्थितियाँ कैसी भी हो, उसके पापा ने कभी अपने परिवार का साथ नहीं छोड़ा।

एक बार उसका पूरा परिवार यानी वह लड़की, उसके पिता यानी सभी लोग कहीं धार्मिक स्थल पर गए थे। वहाँ से आते समय उनके साथ एक बहुत ही दु;खद सड़क दुर्घटना हो गई, जिसमें उसकी माँ घायल हो गई, उसकी छोटी बहन के हाथ में चोट लग गई, बाकी बड़ी बहनें वे सब ठीक थीं। उसके पिताजी उसके साथ नहीं थे बल्कि वे दूसरी गाड़ी में पीछे आ रहे थे। वहाँ के स्थानीय लोगों ने उनकी बहुत मदद की। उन्हें नजदीकी अस्पताल में ले गए। फिर वहाँ उसके पिताजी पहुँचे।

आगे वह लड़की लिखती है- उसके पिताजी ने लोगों से कर्ज लेकर अपने परिवार वालों का इलाज करवाया। उसके पापा ने बहुत तकलीफ सही है। सिर्फ उसके अकेले पापा हैं जो घर चलाते हैं, पर अब वह लड़की भी अपने स्कूली पढ़ाई खत्म करने के बाद अपनी माँ के साथ काम करने लगी। थोड़ी समझदार हो गई है इसलिए वह जानती है कि पिता का साथ देना क्यों जरूरी है और कितना जरूरी है? उसकी नजरों में उसके पापा उनके लिए बहुत तकलीफ उठाते हैं। अब वह लड़की अपने पापा को ज्यादा दिन और काम करने नहीं देगी। वह एक सफल बेटी बनके अपने पिता का काम आसान करेगी। वह अपने पिता को भगवान का भी ऊपर वाला दर्जा देती है। वह इसलिए क्योंकि उसने अपने पिता को हमेशा परिवार के लिए खुशियाँ और उनका हर सपना पूरा किया।

आगे वह एक शायरी अपने पिता के नाम पर लिखती हैं-
मैं इस दुनिया में बस अपने पापा को अपना मानती हूँ।
बाकी दुनिया कैसी है मैं अच्छे से जानती हूँ।

वह शहजादी है उस बादशाह की जिसको पूरी दुनिया पापा कहती है। आप ही बताइए चार बेटियों को पालने वाला इनसान बादशाह से कम तो नहीं होता ना। जिसका कोई बुढ़ापे के लिए सहारा भी ना हो, उनकी बेटियाँ उन्हें बादशाह के नजर से ही दिखेगी।

आगे वह लिखती है-
अगर घर में उसे कोई डाँटता है
या मम्मी किसी बात को लेकर डाँटती है, तब वह पापा से कह कर उसको डँटवाती है, और यह सब देखकर वह बहुत खुश होती है।

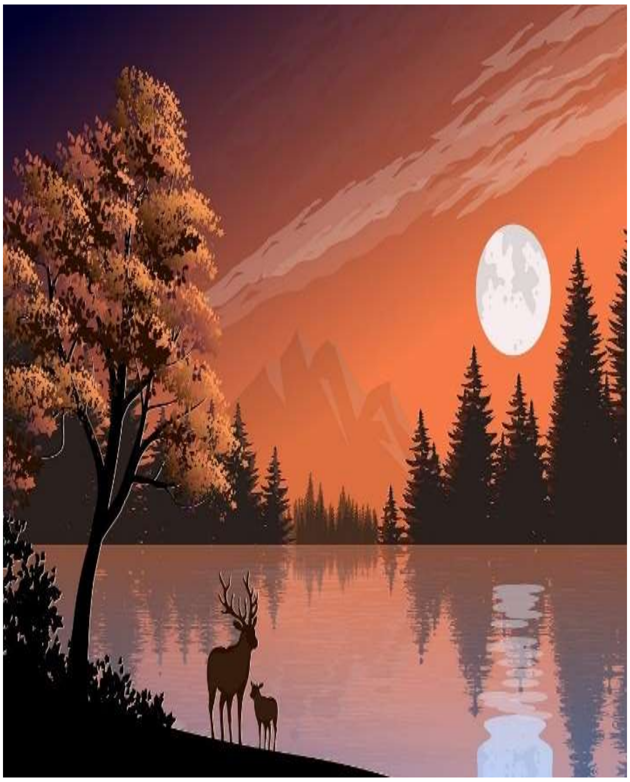

03

पूजा कश्यप
बी.एससी. पंचम सेमेस्टर

पिता के लिए क्या लिखूँ? शायद शब्द ही कम पड़ जाएँ। मेरे पापा मेरे लिए प्रेरणा और ज्ञान के स्रोत हैं, जिनसे प्रेरित होकर ही शायद आज मैं उस मार्ग पर चल रही हूँ, जिस पर चलकर एक दिन कामयाबी के शिखर तक पहुँच जाऊंगी। मेरे प्रेरणा स्रोत और मेरा मार्गदर्शन करने वाले मेरे पिताजी, मेरे लिए मेरी जिन्दगी का वह चमकीला सितारा हैं, जिनसे रोशन होकर हर परिस्थिति में मैंने अपने जीवन में सन्तुलन बनाया हुआ है।

पिता के साये में पलकर मानों जीवन में बहुत कुछ पा लिया है। पिता मेरे जीवन का आधार है। एकमात्र माता-पिता ही वो व्यक्ति होते हैं, जिनका प्रेम अपनी संतान के प्रति निःस्वार्थ होता है। पिता के द्वारा हमारे लिए लिया गया कोई भी फैसला कभी भी गलत नहीं हो सकता, इसलिए प्रत्येक बेटे-बेटी को अपने पिता के हर फैसले का दिल से स्वागत करना चाहिए।

मुझे आपसे बहुत प्यार है पापाजी... आप मेरे जीवन का आधार हो । मेरी खुशियों का आधार हो । हर कामयाबी का आधार हो । कैसे बयां करूँ कि क्या हो आप मेरे लिए, आपके लिए जितना लिखूँ, कम ही है ।

शीतल, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

शीतल, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

सचिन

मेरी माँ

वंदना कुमारी
सपना
पूजा कश्यप

वंदना कुमारी
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

मेरी माँ बहुत सुंदर और दयालु स्त्री है। वो हमारे घर को संभालती हैं। मेरी माँ के लिए मेरे मन में विशेष सम्मान और आदर है, क्योंकि वह मेरी पहली शिक्षिका हैं जो न केवल मेरी किताबों के अध्यायों को पढ़ाती हैं बल्कि मुझे सही रास्ते पर चलना भी सिखाती है। वह हमेशा मुझे बड़ों का आदर और छोटे से प्यार करने की सीख देती है। वह हमेशा मेरी जरूरतों का ध्यान रखती है। मेरी माँ हमारे परिवार में एक अलग भूमिका निभाती है। जब कोई हमारे परिवार का सदस्य बीमार पड़ जाता है तो उसकी उचित देखभाल करती है। मेरे जीवन में मेरी माँ मेरे लिए सबसे प्रभावशाली इनसान हैं। वह न केवल मेहनती हैं बल्कि अपने काम के प्रति भी काफी समर्पित हैं। वह सुबह जल्दी उठती है और सूरज उगने से पहले ही अपने दैनिक कार्यों में लग जाती हैं। वह घर की साफ-सफाई करती है और सबके लिए खाना बनाती है वह हमारे पसंद-नापसंद का ध्यान भी रखती है।

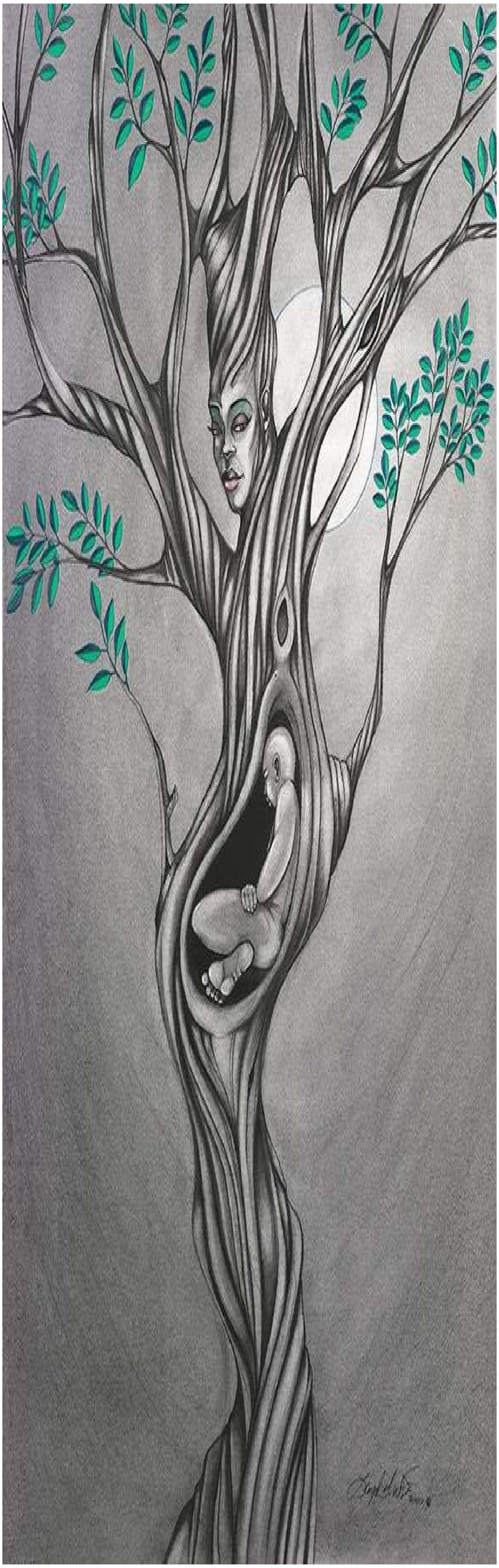

पूजा कश्यप
बी.एससी. पंचम सेमेस्टर

माँ के लिए जितना लिखा जाए कम ही कम है। मेरी माँ मेरे जीवन वो अहम हिस्सा है, जिनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम ही है। मेरी माँ एक ऐसी स्त्री हैं जो मेरे जीवन के कार्य में हमेशा मेरे साथ रहती है। माँ के लिए बच्चों का प्रेम भी उतना ही होता है, जितना कि माँ का अपने बच्चों के लिए परन्तु फिर भी बच्चों का प्रेम माँ के लिए उतना अधिक नहीं हो सकता, जितना की माँ का अपने बच्चों के लिए होता है।

हमें माँ का सदैव सम्मान करना चाहिए। माँ चाहे किसी की भी हो वह हमेशा आदरणीय ही होती है। मुझे तुमसे प्यार है माँ।

सपना

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

यह कुछ समय पहले की बात है, जब मैं 15 वर्ष की थी। कक्षा 7 में पढ़ती थी। तब सुबह रोज 6:00 बजे जगना और तैयार होना पड़ता था। तैयार होकर जल्दी-जल्दी स्कूल के लिए निकलना पड़ता था । तब मम्मी मुझे रोजाना सुबह तेज -तेज आवाज लगती थी। मुझे उसे समय पर उन पर बहुत गुस्सा आता था। शायद बच्चे थे। तो नींद के लिए । और समझना में भी थोड़ा कमजोर थे। जब मम्मी आवाज लगाती । तो हम नहीं उठ पाए थे। नींद बहुत आती थी। पर मम्मी के समय से उठाने पर ही हम समय पर स्कूल पहुंच जाते थे। फिर भी बहुत लड़ते थे। कि तुम तेज -तेज आवाज देती हो। थोड़ी देर से उठाया करो। और थोड़ा नोक- झोंक भी होती थी। लड़ते भी थे। पर मम्मी पुनः दूसरे दिन फिर उसी समय पर आवाज लगाने लगती। आज हम बहुत बड़े तो हो गए हैं। पर मम्मी की आदत नहीं गई। आज हम उस आवाज को सुनना चाहते हैं। फिर से मम्मी से प्यार से लड़ना चाहते हैं। पर अब वह बीमार है। वह हमें अब आवाज नहीं दे सकती। पर उनकी आवाज आज तक हमारे कानों में आती हैं। और हम उसे आवाज और अपनी मां से बहुत प्यार करते हैं। आज जब भी कहीं हम देर से पहुँचते हैं। या देर से उठते हैं। तो हमें मम्मी की बहुत तेज प्यारी सी आवाज याद आती है। अब भी मैं उस आवाज को सुनना के लिए बेचैन हूँ। मैं चाहती हूँ। कि मम्मी मुझे फिर से तेज-तेज आवाज दे और मैं अनसुना कर दूं। फिर वह मुझसे लड़ाई करें। और मुझे जबरदस्ती उठाए, और स्कूल भेजें। इसलिए जो आज है। उनको खुश रखकर चलो, वरना बाद में सिर्फ याद करने के अलावा कुछ नहीं रह जाता है। क्योंकि बीता हुआ पल कभी वापस नहीं आता है, और ना ही वह लोग जिनसे हम प्यार करते हैं।

वह हस्ती लगता जन्नत है।
वह बोलती ऐसी मिठास है।
कभी गुस्सा होती तो कभी रूठ जाती।
पर मुझसे हमेशा प्यार करती। जो दुनिया में सबसे खास है।
वह मेरी माँ का प्यार मेरे पास हैं।
भगवान का सबसे खास तोहफा है।
हर मुश्किलों से लडने का वह होंसला हैं।
कभी कोई दुःख न मिले उसे।
हर जन्म में यही प्यार करने वाली माँ मिले मुझे।
हर ग़म से मुझे बचाती है।
मेरी जिंदगी को खुशियों से सजाती है।
कोई दुनिया में न उसके जैसा होगा।
सब नफरत, धोखा देते हैं
पर इस दुनिया में कोई मेरी माँ जैसा न होगा ।

महाविद्यालय गतिविधियाँ

दिनांक : 23 फरवरी 2024

फ्लैग ऑफ सेरेमनी ऑफ प्रोजेक्ट गौरव

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में 'फ्लैग ऑफ सेरेमनी ऑफ प्रोजेक्ट गौरव' योजना का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा देहरादून में ऑनलाइन माध्यम से किया गया।

प्रोजेक्ट के नोडल अधिकार डॉ. अतीश वर्मा ने बताया कि इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत स्नातकोत्तर स्तर पर प्रदेश के पाँच हजार छात्र छात्राओं को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के बैनर तले सत्तर घंटों के तीन स्तरों में प्रशिक्षण प्रदान कर प्रमाणपत्र एवं स्वरोजगार प्रदान किया जाएगा। डॉ. अतीश ने बताया कि इस प्रशिक्षण हेतु महाविद्यालय के कुल पैंसठ छात्र-छात्राओं का पंजीकरण किया गया है। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त वाणिज्य विभाग प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. मनप्रीत सिंह और डॉ. हितेंद्र शर्मा उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : डॉ. हितेंद्र शर्मा

दिनांक : 24 फरवरी 2024

जिंदगी लाइव 'पहले शौक फिर बर्बादी'

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर के इतिहास विभाग के तत्वाधान में आज विद्यार्थियों को नशा मुक्त उत्तराखंड ड्रग फ्री देवभूमि अभियान के अंतर्गत इतिहास व्याख्यान कक्ष में लगभग 40 मिनट की वीडियो फिल्म- जिंदगी लाइव "पहले शौक फिर बर्बादी" दिखाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. केके पांडे एवं संचालन डॉ. विकास रंजन द्वारा किया गया। विभाग प्रभारी डॉ. मनुहार आर्य ने विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम के विषय में विस्तृत रूप से बताया कि सभी विद्यार्थी इस फिल्म को देखने के बाद अपने अनुभव लिखित रूप में प्रस्तुत करेंगे।

फिल्म देखने के बाद विद्यार्थियों द्वारा अत्यंत सुंदर विचार लिखकर प्रस्तुत किए गए। इस लिखित फीडबैक में बी.ए. प्राचार्य केके पांडे द्वारा विद्यार्थियों के साथ युवाओं में नशे की लत विषय में विस्तार से चर्चा तथा उन्हें प्रत्येक कार्य आत्मविश्वास के साथ करने की सलाह दी गई। प्राचार्य द्वारा फिल्म के माध्यम से छात्र-छात्राओं को जागरूक करने की अनूठी पहल की सराहना भी हुई। तृतीय वर्ष की कु. स्वाति प्रथम, बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर की कु. पिंकी द्वितीय तथा बी.ए. तृतीय वर्ष की कु. सोना एवं एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर के श्री संदीप कुमार तृतीय स्थान पर रहे।

कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में समाजशास्त्र विभाग के डॉ. अनिल कुमार सैनी, इतिहास विभाग के श्री. कैलाश तथा हिंदी विभाग से डॉ. खेमकरण रहे। अंत. में डॉ. मनुहार आर्य एवं डॉ. अनिल कुमार सैनी द्वारा विद्यार्थियों के साथ नशा करने के कारणों पर संवादात्मक चर्चा की गई, जिसमें विद्यार्थियों ने खुलकर अपने विचार व्यक्त किए। निर्णायक मंडल द्वारा चारों विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कारस्वरूप पेन भेंटकर, उनका उत्साहवर्धन किया गया।

रिपोर्ट : डॉ. कैलाश

दिनांक : 21 फरवरी 2024

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर एक दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। अतिथियों के स्वागत के बाद सर्वप्रथम ऑनलाइन पत्रिका 'समावेश' का लोकार्पण शिक्षाविद एवं प्राचार्य के.के.पांडे, मुख्य अतिथि युवा शायर तकी बाजपुरी, डॉ. रीता सचान, डॉ. बी. के. जोशी, डॉ. अनिल कुमार सैनी, डॉ. संध्या चौरसिया, डॉ. विकास रंजन, डॉ. मनुहार आर्या, डॉ. अतीश वर्मा, डॉ. मनप्रीत सिंह, श्री प्रियंवद और संपादक डॉ. खेमकरण सोमन और छात्र संपादकों ने किया।

महाविद्यालय की वरिष्ठ शिक्षिका डॉ. रीता सचान ने मातृभाषा पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि मातृभाषा लगाव की भाषा होती है, अतः इस भाषा में सोचने और विचार व्यक्त करने से न स्वयं का अपितु देश और समाज का भी विकास होता है।

लेखक-विचारक श्री प्रियंवद ने मातृभाषा के इतिहास पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज का दिन हमें यह एहसास करवाता है कि दुनिया की सभी भाषाओं का हम सब सम्मान करना सीखें। युवा शायर तकी बाजपुरी ने एक ओर भाषा पर अपने विचार व्यक्त किए, वहीं दूसरी ओर अपनी रचनाओं से शिक्षकों और छात्र-छात्राओं को झूमने के लिए विवश कर दिया। उनकी कविताओं को छात्र-छात्राओं द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे शिक्षाविद और प्राचार्य के.के.पांडे ने समावेश के संपादक डॉ. खेमकरण 'सोमन' और उनकी युवा संपादकीय टीम को बधाई देते कहा कि किसी महाविद्यालय की उपलब्धि छात्र-छात्राएँ ही हैं, अतः उनके रचनात्मक उभार के लिए समावेश जैसी पत्रिका का प्रकाशन यकीनन स्वागत योग्य है। विशेषकर छात्र संपादकों को सक्रिय रूप से बधाई। उन्होंने कहा कि छात्र और शिक्षकों के सहयोग से ही महाविद्यालय की उन्नति होती है। यह भी एक भाषा है जिसे पकड़ने की आवश्यकता है।

समावेश पत्रिका के संपादक डॉ. खेमकरण 'सोमन' ने मुख्य अतिथि और प्राचार्य के.के.पांडे सहित पत्रिका के सभी नए लेखकों, छात्र समादकों और महाविद्यालय स्टॉफ के प्रति

आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संपादकीय टीम प्रयास कर रही है कि समावेश पत्रिका डिजिटल संस्करण के साथ-साथ साथ प्रिंट संस्करण में भी उपलब्ध हो। कार्यक्रम के बीच में- लिफाफा खोल दिया जाए- लाइव प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ, जिसमें प्राचार्य के.के.पांडे द्वारा आदर्श कुमार, मन्तशा बी, काजल और सपना सहित लेखकों एवं छात्र संपादकों में नेहा मौ. उमर, कु.सपना, नेहा, निशा, दीपक कुमार चौधरी, सताक्षी शर्मा, अंजली, दीपक कुमार, अंशिका गुप्ता, तन्नू, कु. संतोष, सोनम, बली मोहम्मद, राहुल सिसौदिया, अन्नू पांडे, दिव्या, मिथुन विश्वास और उजमा खान को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग की डॉ. संगीता ने बहुत खूबसूरती से किया।

इस अवसर पर एन.सी.सी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. मनप्रीत सिंह, डॉ. सूरजपाल सिंह, डॉ. आदर्श चौधरी, डॉ. ललित कुमार, डॉ. पूजा, डॉ. वंदना, डॉ. संगीता, डॉ. संजय सिंह बिष्ट, डॉ. नीलम मनोला, डॉ. कैलाश उनियाल, डॉ. रोहित कुमार, आदित्य कुमार, दीपक कुमार, दीपा आर्य, डॉ. मेहराज बानो, शकुंतला देवी, बलविंदर, चंदन, हरीश बुधला, स्नेहा, कुसुमलता और डॉ. खेमकरण सोमन सहित महाविद्यालय के अन्य कर्मचारीगण भी उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : डॉ. संगीता, उज़मा खान, दिव्या, सुषमा, बली मोहम्मद, सताक्षी शर्मा और शिवम्

दिनांक : 28 फरवरी 2024

फेयरवेल पार्टी का आयोजन

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में एम ए चतुर्थ सेमेस्टर, हिंदी के विद्यार्थियों को एम ए हिंदी द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा फेयरवेल पार्टी दी गई। फेयरवेल पार्टी से पूर्व एम ए हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों की मौखिकी परीक्षा संपन्न हुई।

फेयरवेल पार्टी में अनौपचारिक वार्तालाप करते हुए प्राचार्य प्रो. केके पांडे ने कहा कि विद्यार्थियों के आगमन से महाविद्यालय आबाद रहता है। विद्यार्थी अधिकाधिक संख्या में आएँ और शिक्षा एवं कैरियर संबंधी तमाम सवाल, अपने शिक्षकों एवं मुझसे पूछा करें। प्राचार्य की सबसे बड़ी भूमिका भी यही होती है कि वह महाविद्यालय को अध्ययन-अध्यापन और नवाचार का केंद्र बनाएँ।

समाजशास्त्र विभाग के प्रो. अनिल कुमार सैनी ने जीवन संबंधी कई बातों पर जोर देते हुए कहा कि जीवन सीखने-

सिखाने का नाम है, इसलिए निरंतर सीखते हुए आगे बढ़ते रहें। निराशा को कदापि आने ना दें।

डॉ. खेमकरण 'सोमन' ने उन्हें भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएँ दी। कहा कि विद्यार्थी प्रायः नौकरी न मिलने से आत्महत्या कर अपना जीवन समाप्त कर लेते हैं। वे खुशहाली का मापक ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना, गाड़ी, मोबाइल खरीदना और अच्छी नौकरी मान बैठे हैं। ऐसे में जरूरी है कि लोभ-लालच से बचकर अपनी प्रतिभा के अनुसार अपना भविष्य तय करें। इस अवसर पर हिंदी विभाग की विभाग प्रभारी डॉ. संध्या चौरसिया, डॉ. प्रदीप दुर्गापाल, उजमा खाना, डॉ. मेहराज बानो, दिव्या, डॉ. ललित कुमार, डॉ. संगीता, बलविंदर, प्रभजीत कौर, पूजा जोशी, नेहा, रितिका, बली मोहम्मद, संतोष, सुषमा, गंगा, शैलेश पंत, वर्षा, सपना, रश्मि, और शिवम आदि उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : गंगा, शिवम् और शैलेश पंत

दिनांक : 05 जून 2024

विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजन

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाजपुर में वनस्पति विज्ञान विभाग परिषद द्वारा 05 जून विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित किया गया। महाविद्यालय की प्रभारी प्राचार्य डॉ. रीता सचान ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं द्वारा भाषण, स्लोगन, कविता पाठ और पोस्टर आदि के रूप में आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिनमें पर्यावरण, जल, जंगल, जमीन एवं पृथ्वी के मूल्य व महत्व को समझने और उन्हें बचाने के सार्थक संदेश दिए गए। विभिन्न थीम पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता के आयोजन में अवनीत कौर प्रथम, नाजिश द्वितीय एवं फरीदा बानो तृतीय स्थान पर रहीं।

इस अवसर पर वनस्पति विज्ञान विभागीय परिषद द्वारा पूर्व में आयोजित साइंस मॉडल प्रतियोगिता के विजेताओं में प्रथम स्थान प्राप्त नीतू, द्वितीय स्थान प्राप्त कोमल कंबोज और तृतीय स्थान प्राप्त नेहा, पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त संस्कृति, द्वितीय स्थान प्राप्त हेमू मेहरा और तृतीय स्थान प्राप्त सूबिया, और निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं में प्रथम स्थान प्राप्त उजमा, द्वितीय स्थान प्राप्त सिमरन शेख एवं तृतीय स्थान प्राप्त प्राची चंद्रा को आकर्षक पुरस्कार प्रदानकर सम्मानित किया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. कमल किशोर पाण्डे के संरक्षण में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. अनिल कुमार सैनी ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए

पर्यावरण को संरक्षित करने के बारे में अपने व्यावहारिक विचार प्रस्तुत किए।

प्रभारी प्राचार्य डॉ. रीता सचान ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस 2024 का थीम है -'भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखा सहनशीलता'। हमारी ओर से इस पर गहनता से विचार करने और क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर पर्यावरण को बचाने की निरंतर अपील होनी चाहिए। उन्होंने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा एवं उसका संरक्षण सभी का कर्तव्य है। हम सभी को न सिर्फ अपने लिए अपितु अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए भी इस पर्यावरण को बचाना है। यह तभी संभव है जब हम सभी मिलकर इस धरती को पर्यावरण को संरक्षित करने का एकजुट प्रयास करें।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीलम मनोला ने किया। कार्यक्रम में डॉ. अनिल कुमार सैनी, डॉ. विकास रंजन, डॉ. प्रदीप दुर्गापाल, डॉ. अतुल उप्रेती, डॉ. सूरजपाल सिंह, डॉ. बीके जोशी, डॉ. आदर्श, डॉ. जया कांडपाल, डॉ. मनप्रीत सिंह, डॉ. संजय सिंह बिष्ट, डॉ. खेमकरण सोमन, डॉ. कैलाश और डॉ. जय सिंह, डॉ. ललित कुमार, डॉ. वंदना और डॉ. मेहराज बानो और छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

रिपोर्ट : डॉ. नीलम मनोला

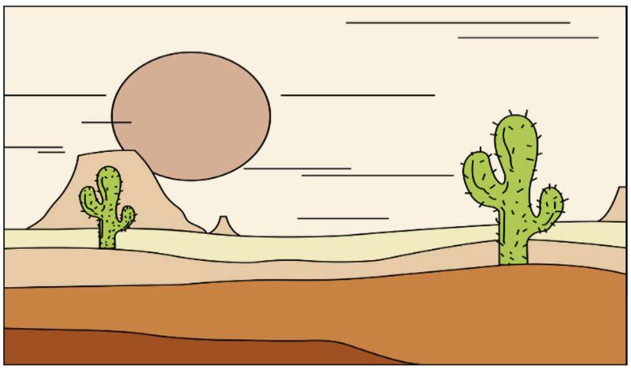

दिनांक : 19 जुलाई 2024

पीएम विश्वकर्म योजना सीखो और कमाओ

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में एनसीसी यूनिट द्वारा द्वारा पीएम विश्वकर्म योजना सीखो और कमाओ के तत्वावधान में हिंदी विभाग के डॉ. खेमकरण सोमन द्वारा कैडेटों को कार्यालयी हिंदी का ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया गया। डॉ. सोमन द्वारा बताया गया कि प्रतिस्पर्धा के दौर में हिंदी कके क्षेत्र में बहुत विस्तार हो रहा है ऐसे में बहुत आवश्यक है कि हमें यह पता हो कि किस प्रकार कार्यालयी हिंदी का ज्ञान प्राप्त करके हम अपना भविष्य निर्माण कर सकते हैं।

इस अवसर पर समाजशास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार सैनी, राजनीति विज्ञान के विभाग अध्यक्ष डॉ. बृजेश कुमार जोशी ,जंतु विज्ञान विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. अतुल उप्रेती , वाणिज्य विभाग के डॉ. आतिश वर्मा, श्री हितेंद्र शर्मा , श्री रोहित एवं महाविद्यालय के चीफ प्रॉक्टर डॉ. प्रदीप दुर्गा पाल और डॉ. ललित कुमार आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर लेफ्टिनेंट डॉ. मनप्रीत सिंह ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय एनसीसी यूनिट के 25 SW एवं 05 SD कैडेट उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : डॉ. अतीश वर्मा

दिनांक : 26 जुलाई 2024

कारगिल विजय दिवस

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर में राष्ट्रीय कैडेट कोर की यूनिट द्वारा कारगिल विजय दिवस बहुत धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम राजकीय महाविद्यालय बाजपुर की एनसीसी यूनिट, सीनियर विंग की अंडर ऑफिसर तनु द्वारा द्वारा परेड कर सलामी दी गई। इसके उपरांत भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें देशभक्ति गीतों द्वारा कारगिल युद्ध के शहीदों और वीरों का स्मरण किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य प्रो. के.के. पांडे ने अपने वक्तव्य में कहा कि कारगिल युद्ध में देश की तीनों सेनाओं ने बहुत बहादुरी के साथ अपनी वीरता का परिचय दिया। यह उनकी बहादुरी का ही परिणाम था कि हम यह युद्ध जीत सके। इस विषय पर कई फिल्मों का निर्माण भी हुआ है जिन्हें देखकर युद्धवीरों के शौर्य से रूबरू हुआ जा सकता है। कार्यक्रम का संचालन एनसीसी ऑफिसर लेफ्टिनेंट डॉ. मनप्रीत सिंह ने किया गया।

रिपोर्ट : डॉ. अतीश वर्मा

दिनांक : 28 मई 2024

संस्कृत विभाग द्वारा श्लोक प्रतियोगिता

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर उधम सिंह नगर में आज दिनांक 28 मई 2024 को संस्कृत विभागीय परिषद द्वारा श्लोक उच्चारण नीतिशतकम) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्कृत विभाग के छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर अंजली बी०ए० द्वितीय सेमेस्टर, द्वितीय स्थान पर राजकुमारी बी०ए० तृतीय वर्ष और तृतीय स्थान पर सोनम बी०ए० द्वितीय सेमेस्टर रही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर कमल किशोर पांडे के द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ० मेहराज बानो द्वारा किया गया। उन्होंने समस्त छात्र-छात्राओं को बताया कि इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्रों की संस्कृत भाषा के प्रति रुचि जागृत करना और छात्रों में वाचन कौशल व आध्यात्मिक विकास करना है। प्रतियोगिता में डॉ० आदर्श कुमार चौधरी, डॉ०ललित कुमार और डॉ० संगीता निर्णय के रूप में रहे।

इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण उपस्थित रहें।

रिपोर्ट : डॉ. मेहराज बानो

आलेख

गुरुत्वाकर्षण और प्रकाश

डॉ. संजय सिंह बिष्ट
भौतिक विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर, ऊधम सिंह नगर

[साहित्य में गहरी रूचि रख रखने वाले भौतिक विज्ञान के असिस्टेंट प्रोफेसर संजय सिंह बिष्ट का नजरिया सकारात्मक एवं सहयोगात्मक है। उन्हें हार्ड वर्क की जगह स्मार्ट वर्क पसंद हैं, जिनके उदाहरण वे समय-समय पर प्रस्तुत करते रहते हैं। वर्तमान में वे 'समावेश' के तकनीकी संपादक हैं।]

आज से लगभग 14 अरब साल पहले 'बिग बैंग' नाम की घटना से इस ब्रह्मांड का अभ्युदय हुआ और तब ही से काल और अंतराल का मापन आरम्भ हुआ I इस महाविस्फोट में काल और अंतराल के अतिरिक्त कुछ और भी अस्तित्व में आई जिनमे मुख्य हैं - पदार्थ, उर्जा, और उनके मध्य कार्यकारी परस्पर बल I आज हम जिसकी चर्चा कर रहे हैं प्रकाश और गुरुत्वाकर्षण, ये इन्ही बलों की एक अभिब्यक्ति हैI

भौतिकी में अगर आधारभूत बलों की बात की जाये तो ये चार प्रकार के होते हैं, जो हैं- गुरुत्वाकर्षण बल (gravitational force), विद्युत्-चुम्बकीय बल (electromagnetic force), प्रबल बल (strong nuclear force) और दुर्बल बल (weak force). अन्य सभी बल जो महसूस किये जाते हैं वो इन्ही आधारभूत बलों के रूप हैं, तथा ये चारों बल अलग अलग दूरियों, आयामों और प्रकृतियों पर लगते हैं I जहाँ गुरुत्वाकर्षण और विद्युत् - चुम्बकीय बल पूरे ब्रह्माण्ड में लम्बी दूरी तक लगते हैं वहीं प्रबल नाभिकीय और दुर्बल बल परमाणु के नाभिक के अंदर अत्यंत सूक्ष्म दूरी (1 फर्मी = 10^{-15} मीटर) पर लगते हैं I

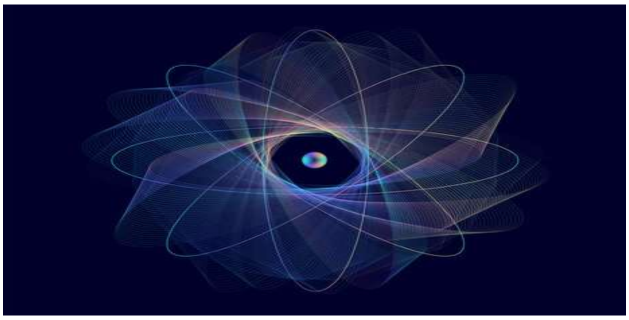

इस लेख में हम अपना ध्यान केवल गुरुत्वाकर्षण और विद्युत्-चुम्बकीय बल पर केन्द्रित करेंगे I गुरुत्वाकर्षण बल जिसकी वजह से हम पृथ्वी पर खड़े रह पाते हैं वायुमंडल में उड़ नहीं जाते तथा विद्युत चुम्बकीय बल जिसके कारण हम पृथ्वी पर आराम से चल पाते हैं। आईए इनकी विशेषताओं को जानते हैं –

कोई भी वस्तु जब हम उसे आकाश में फेंकते हैं तो वह कुछ दूरीतय करने के बाद वापस जमीन पर आ जाती है, जो बताती है की पृथ्वी हर वस्तु को अपनी ओर आकर्षित करती हैI इसी बल की वजह से पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा, ग्रह एवं अन्य आकाशीय पिंड एक निश्चत गति करते हुए स्थिरता बनाये हुए हैंI तारों के बनने एवं बिखरने में भी यही बल कार्यकारी है, इस ब्रह्माण्ड के महान विस्तार को जो बल बांधे हुए है वह गुरुत्वाकर्षण ही हैI

आधुनिक युग में गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत सर्वप्रथम 'सर आइजेक न्यूटन' ने प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार - "इस ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु, अन्य दूसरी वस्तु को आकर्षित करती है और इस लगने वाले बल का परिमाण उनके द्रव्यमान के गुणनफल के समानुपाती और इनकी बीच की दूरी के वर्ग के ब्युत्क्रमानुपाती होता है I" इसी सिद्धांत से हम ग्रहों की गति, उनके द्रव्यमान तथा अन्तरिक्ष में राकेटों के प्रक्षेपण के एकदम सटीक गणना कर पाते हैंI गुरुत्वाकर्षण को समझने के क्रम में एक प्रयास "अल्बर्ट आइंस्टीन" के द्वारा उनकी मशहूर पुष्तक "जनरल थ्योरी ऑफ़ रिलेटिविटी" में किया गया, जिसमे उनके द्वारा समझाया गया कि - गुरुत्वाकर्षण बल, काल और अंतराल फेब्रिक (स्पेस टाइम फेब्रिक) में पड़ने वाली सलवटों का परिणाम है तथा अन्तराल और समय का यह ताना-बाना द्रव्यमान से प्रभावित होता हैI द्रव्यमान की वजह से पैदा हुई इसी सिकुडन की वजह से ही एक वस्तु अन्य वस्तु की तरफ खिंची चली आती है I इसी सिद्धांत से हम आज अत्यंत भारी आकाशीय पिण्डों जैसे तारे, ब्लैक होल आदि की संरचना एवं गुरुत्वीय तरंगों की जटिल क्रियाविधि को समझ पा रहे हैंI "ब्लैक होल" का द्रव्यमान तो इतना अधिक होता है कि ये अपने आसपास के समस्त पदार्थ को निगल जाता है चूँकि प्रकाश भी इसके गुरुत्वाकर्षण बल से बच नहीं पाता है और इसी में समा के रह जाता है जिसकी वजह से कोई प्रकाश निकल कर हम तक नहीं पहुँच पाता अतः यह हम काला प्रतीत होता हैI

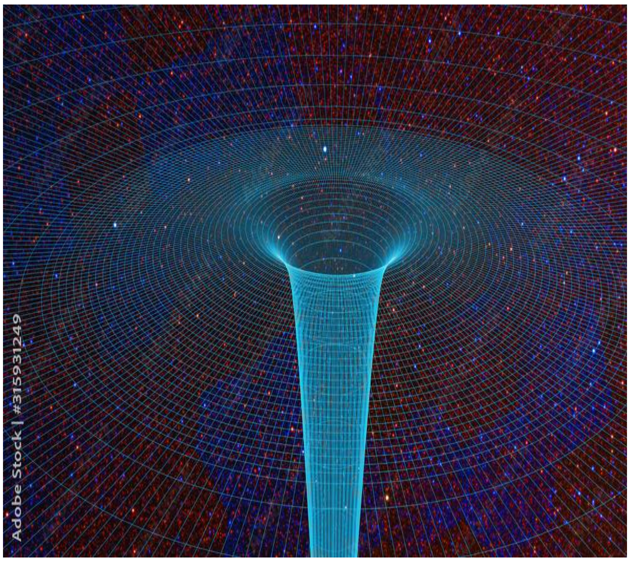

दूसरी तरफ प्रकाश, विद्युत्-चुम्बकीय विकिरण के स्पेक्ट्रम का एक छोटा सा हिस्सा है और यह हमें वस्तुओं को देखने में सहायक है बिना प्रकश के हम किसी भी दृश्य का आनंद नहीं ले पाएंगे, सोचिये जरा रात के अंधकार में आँखें खुली होने के बाद भी हमें कुछ दिखाई नहीं देता हैI ये विद्युत्-चुम्बकीय तरंगें, विद्युत् चुम्बकीय बल का ही प्रभाव हैंI इसमें गामा किरणें, एक्स किरणें, अल्ट्रावायलेट किरणें, दृश्य प्रकाश विकिरण, अवरक्त किरणें, रेडियो और माइक्रो तरंगें समाहित हैं I इन सभी के अलग अलग प्रयोग हम रोजमर्रा के जीवन में देखते हैं और उस से लाभान्वित होते हैंI इस प्रकार हमारी देखने, सुनने, समझने, सीखने और अनुभव करने की समस्त क्रियाएँ जिस बल से नियंत्रित होती हैं वो है विद्युत् चुम्बकीय बल I

तस्वीर में : डॉ. संजय सिंह बिष्ट

इस समय भौतिकविदों के मध्य यही यक्ष प्रश्न है कि कैसे इन चार आधारभूत बलों को एकीकृत किया जाये, तथा उस एक बल को परिभाषित किया जाये जिसमें ये चारों बल एक ही अवस्था में हो, एकीकृत हों, जैसे की "बिग बैंग" के समय रहे होंगे I यह ब्रह्माण्ड को समझने तथा इसके मूलभूत नियमों की ब्याख्या करने के प्रयास में एक मील का पत्थर साबित होगा I गुरुत्वाकर्षण एवं प्रकाश की अन्य मजेदार कहानियाँ अथवा भौतिकी की चर्चा के लिए कभी भी संपर्क करें I

संपादक की ओर से ...

डॉ. खेमकरण 'सोमन'

दोस्तों, विगत दिनों मेरे दोस्त ने अपना दु:ख प्रकट किया कि उन्हें हमेशा लगता है कि हम सब अपनी जिम्मेदारियाँ अब भूल रहे है। या कहें कि भूल ही गए हैं। विज्ञान की भारी उन्नति के बाद भी यह बहुत चिंता का विषय है कि हम पढ़े-लिखे लोग भरी जवानी में ही एल्जाइमर के शिकार हो चुके हैं कि अब न तो हमें अपने कर्तव्य का ध्यान रहता है, न अपनी जुबान का। खाना-पीना और सोना ही एकमात्र हमारे जीवन का लक्ष्य रह गया है। कर्तव्य और अधिकार को बखूबी समझने के बाद भी हम केवल अपने ही अधिकार की बात करते हैं। प्रतिदिन पत्र-पत्रिकाओं, सोशल मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया में मनुष्यता और संवेदनशीलता के जिस प्रकार परखच्चे उड़ रहे हैं, वास्तव में सामूहिक रूप से यह हम सबकी हार है। अब किसी के मरने पर किसी को कोई कष्ट नहीं होता। अब हम सार्वजनिक मुद्दे पर भी एक नहीं होते । क्या यह चिंता का विषय नहीं?

चूंकि हम दोनों ने आदित्य नाथ झा राजकीय इंटर कॉलेज रूद्रपुर से शिक्षा ग्रहण की थी, अतः उनकी संवेदनशीलता से मैं लम्बे समय से परिचित हूँ। अब जबकि वे बहुत अच्छे पद पर कार्यरत हैं, और चाहते हैं कि कुछ ऐसा किया जाए कि देश और समाज में वह अपनी भूमिका तय कर सकें। केवल स्वयं के लिए जीवन व्यतीत करना उन्हें बहुत भार लग रहा था । मैं समझ गया कि उनका संकेत युवा या पढ़े-लिखे लोगों से है जो अपना कुछ वक्त अपने परिवार की तरह अपने समाज पर भी खर्च कर सकें ।

बहरहाल, दोस्त से बातचीत करने के बाद मैंने हिंदी अकादमी की पत्रिका 'इन्द्रप्रस्थ भारती' का नवंबर-दिसंबर 2022 का अंक उठा लिया। दोस्तों, मुझे वहाँ जो कुछ भी पढ़ने को मिला, बहुत पीड़ा के साथ वह अब मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ ताकि हम विचार कर सकें-

कि...

दुनिया भर में करीब 15 करोड़ बच्चे सड़कों पर रहते हैं।

अकसर ये बच्चे अपने घर से भाग जाते हैं क्योंकि इनके परिवार ग़रीब होते हैं, घर पर इनके माँ-बाप अक्सर नशा करते हैं और हिंसक हो जाते हैं।

कई बार प्राकृतिक आपदाओं की वजह से बच्चे बेघर हो जाते हैं और बड़े शहरों में किसी तरह जिन्दगी गुजारने की कोशिश करते हैं।

सड़क पर रह रहे बच्चे दो तरह के होते हैं-

कुछ बच्चे दिन भर सड़कों पर काम करते हैं लेकिन शाम को अपने परिवार में लौट जाते हैं।

कुछ बच्चे अपना पूरा वक़्त सड़कों पर ही बिताते हैं और रात को भी सड़क के किनारे सोते हैं।

-संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट

आइए हम विचार करें

कि...

क्या यह मनुष्यता के लिए शर्मिन्दगी का सबब नहीं है ?

प्रिय छात्र-छात्राओं,
‘समावेश’ का यह अंक कैसा लगा?
प्लीज... हमें अवश्य बताएँ।

हमें लिखित बताएँ
या मौखिक बताएँ
लेकिन अवश्य बताएँ
कि हम कैसा कार्य कर रहे हैं?
या हमें और क्या करना चाहिए?

हम अपनी सफाई दिए बिना
आपकी बातों को
और अपनी कमियों को शांत मन से
सुनना चाहते हैं, और
उन पर विचार व सुधार करना चाहते हैं।

प्रिय छात्र-छात्राओं,
‘समावेश’ पूर्णतः आपकी पत्रिका है
अतः आप अपनी
कविता, कहानी, लेख, यात्रावृत्तांत,
निबंध, और साक्षात्कार
hindivibhag2@gmail.com
भेजकर, हमें संबल प्रदान करें।

-
संपादक
डॉ. खेमकरण ‘सोमन’

यादें...

वार्षिक क्रीड़ा समारोह 2023-2024

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, 21 फरवरी 2024

विदाई समारोह, समाजशात्र विभाग, 2023-2024

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस [एनसीसी यूनिट] 2023-2024

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के हैं। इनसे महाविद्यालय की नीतियों, योजनाओं और विचारों का सहमत होना आवश्यक नहीं।
: संपादक